मातृभूमि के लिए

डॉ॰ रमेश पोखरियाल 'निशंक'

जन्म : 15 अगस्त सन् 1959, ग्राम पिनानी, पट्टी घुड़दौड़स्यूँ जनपद पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखंड (हिमालय) भारत।

प्रकाशित कृतियाँ : समर्पण, नवांकुर, मुझे विधाता बनना है, तुम भी मेरे साथ चलो, देश हम जलने न देंगे, मातृभूमि के लिए, जीवन-पथ में, कोई मुश्किल नहीं, प्रतीक्षा, ए वतन तेरे लिए, संघर्ष जारी है (काव्य-संकलन): रोशनी की एक किरण, बस एक ही इच्छा, क्या नहीं हो सकता, भीड़ साक्षी है, खड़े हुए प्रश्न, विपदा जीवित है, एक और कहानी, मेरे संकल्प (कथा-संग्रह): मेरी व्यथा, मेरी कथा (शहीदों के पत्रों का संकलन): निशांत, मेजर निराला, बीरा, पहाड़ से ऊँचा (उपन्यास), हिमालय का महाकुंभ-नंदा राजजात (यात्रा-वृतांत)।

देश-विदेश की अन्य भाषाओं में अनुवाद : 'ए वतन तेरे लिए' व 'खड़े हुए प्रश्न' का तमिल व तेलुगु भाषा में अनुवाद। 'खड़े हुए प्रश्न' व 'क्या नहीं हो सकता' का मराठी में अनुवाद। हैम्बर्ग विश्वविद्यालय द्वारा 'बस एक ही इच्छा', 'प्रतीक्षा' व 'तुम और मैं' कृतियों का जर्मनी में अनुवाद। 'भीड़ साक्षी है' कृति का अँग्रेज़ी भाषा में अनुवाद हैम्बर्ग विश्वविद्यालय में प्रो॰ तात्यानिया द्वारा कई कहानियों का रूसी भाषा में अनुवाद।

साहित्य पर शोधकार्य : गढ़वाल, कुमाऊँ, मेरठ, मद्रास, रुहेलखंड व कुरुक्षेत्र सहित अनेक विश्वविद्यालयों में साहित्य पर शोधकार्य।

राजनीतिक पृष्ठभूमि : 1993 व 1996 में लगातार तीन बार कर्णप्रयाग क्षेत्र से उत्तर प्रदेश विधानसभा हेतु निर्वाचित; सन् 1997 में उ॰प्र॰ में पर्वतीय विकास विभाग व तदुपरांत संस्कृति, पूत धर्मस्व व कला विभाग के कैबिनेट मंत्री। उत्तरांचल राज्य गठन के उपरांत वित्त सहित बारह विभागों के कैबिनेट मंत्री। मार्च 2007 से मई 2009 तक स्वास्थ्य सहित अनेक विभागों के कैबिनेट मंत्री। वर्तमान में उत्तराखंड के मुख्यमंत्री।

सम्मान : उत्कृष्ट साहित्य-सृजन हेतु तत्कालीन राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह, डॉ॰ शंकरदयाल शर्मा व डॉ॰ ए॰पी॰जे॰ अब्दुल कलाम द्वारा राष्ट्रपति भवन में सम्मानित, अंतर्राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, कोलंबो, श्रीलंका द्वारा साहित्य व समाजसेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य हेतु 'डॉक्टर ऑफ़ साइंस' की मानद उपाधि, हैम्बर्ग विश्वविद्यालय जर्मनी के अतिरिक्त हालैण्ड, नार्वे, रूस सहित कई यूरोपीय देशों व विश्वविद्यालयों सहित देश-विदेश की अनेक सामाजिक/सांस्कृतिक/साहित्यिक संस्थाओं द्वारा सम्मानित।

संप्रति : प्रधान संपादक 'सीमांत वार्ता' दैनिक व उत्तराखंड सरकार में मुख्यमंत्री।

संपर्क : 37/1 विजय कॉलोनी, रवींद्रनाथ टैगोर मार्ग, देहरादून, उत्तराखंड, भारत।

e-mail : nishankramesh@gmail.com

website : rameshpokhriyalnishank.com

मातृभूमि के लिए

(राष्ट्रीय अस्मिता की कविताएँ)

रमेश पोखरियाल 'निशंक'

हिंदी साहित्य निकेतन, बिजनौर

ISBN 97881-89790-67-7

प्रकाशक : **हिन्दी साहित्य निकेतन**
16 साहित्य विहार
बिजनौर (उ०प्र०)
फ़ोन : 01342-263232
ई-मेल : giriraj3100@gmail.com
वैब साइट : www.hindisahityaniketan.com
टाइप सैटिंग : अनुभूति ग्राफ़िक्स, बिजनौर (उ०प्र०)
मुद्रक : आदर्श प्रिंटर्स, दिल्ली 32
संस्करण : 2009 (तृतीय संस्करण)
मूल्य : दो सौ रुपए

MATRI BHOOMI KE LIYE (POETRY) BY RAMESH POKHARIYAL 'NISHANK'
Rs. 200.00

समर्पण

मातृभूमि के लिए
अपना
सर्वस्व
न्यौछावर करने वाले
मातृपुत्रों
को

—'निशंक'

राष्ट्रीय चेतना से संपृक्त : मातृभूमि के लिए

हिंदी-साहित्य में राष्ट्रीय भावना एवं देश-प्रेम से ओत-प्रोत कविताओं की एक लंबी परंपरा रही है। 'निशंक' का काव्य-संग्रह 'मातृभूमि के लिए' इसी परंपरा की एक कड़ी है। इस संग्रह की कविताओं एवं गीतों के आद्योपांत अध्ययन के पश्चात् कोई भी काव्य-प्रेमी इस सत्य से साक्षात्कार कर सकता है।

'मातृभूमि के लिए' काव्य-संग्रह कवि का कोई पहला संग्रह नहीं है। इससे पूर्व भी उनके अनेक काव्य-संग्रह 'समर्पण', 'नवांकुर', 'मुझे विधाता बनना है', 'तुम भी मेरे साथ चलो', 'देश हम जलने न देंगे' और 'जीवन-पथ में' आदि प्रकाशित हो चुके हैं। इतना ही नहीं, कवि का एक कहानी-संग्रह 'बस एक ही इच्छा' भी प्रकाशित हो चुका है।

अस्पष्टता एवं धुँधले परिवेश एवं वातावरण से आकुल जनों को निरंतर प्रकाश की ओर अग्रसर करने के लिए कवि 'निशंक' प्रयत्नशील हैं। वास्तव में यह कवि 'तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृतं गमय' का पक्षधर है। प्रकाश किसी की बपौती नहीं होता वरन् पूरे समाज, राष्ट्र एवं विश्व से उसका सीधा संबंध होता है। उसी संबंध के विस्तार की अपेक्षा में इस काव्य-संग्रह की कविताएँ भावालोकित हैं। कवि स्वयं प्रतिश्रुत होते हुए कहता है– 'इस संग्रह का उद्देश्य भावी पीढ़ी में राष्ट्रीय भावना कूट-कूट कर भरना तथा जन-जन को देशभक्ति से ओत-प्रोत करते हुए मातृभूमि के लिए सर्वस्व न्यौछावर करने की भावना जाग्रत करना है।' कवि के गीत इसी के साक्षी हैं।

'मातृभूमि के लिए' की कविताएँ 'जननी जन्मभूमिश्च: स्वर्गादपि गरीयसी' की गहरी भावनाओं के बिंबों से संपृक्त हैं। कवि स्वयं को राष्ट्र की बलिवेदी पर अर्पण करने को तत्पर है। यही नहीं देशवासियों को भी सतत सजग होने के लिए प्रेरित करता है। प्रत्येक राष्ट्रप्रेमी व्यक्ति, चाहे वह किसी भी धर्म, जाति,

वर्ग, भाषा, प्रांत, क्षेत्र, संप्रदाय का हो, उसके अंतर्मन को उद्दीप्त करने में 'मातृभूमि के लिए' की कविताएँ सक्षम हैं।

समाज में व्याप्त भेदभाव की भित्ति को गिराने तथा सभी को संगठन एवं एकता के सूत्र में बाँधकर चलने के लिए कवि का मन सदैव आकुल-व्याकुल दिखता है। कवि की प्रश्नाकुलता का जन्म जहाँ इन्हीं भावनाओं तथा स्वीकृति के निषेधात्मक रूप के उदय होने से होता है, वहीं उसकी ललकार एवं चुनौती के कारण इसी की प्रतिक्रिया का प्रतिफलन होता है। परंतु यह प्रतिफलन बाँझ नहीं अपितु परिवर्तन की चाह से परिपूर्ण है। कवि का हर चिंतन, हर सोच, हर शब्द, हर कार्य इसी दिशा में किया गया प्रयत्न है।

कवि के मन में जो भावना है, वही उसकी वाणी से निःसृत होती है और वही उसके कार्य की परिणति भी होती है। मस्तिष्क के चिंतन एवं हृदय के भावों का समन्वय ही भाषा का रूप ग्रहण कर काव्यरूप में अवतरित होता है। 'निशंक' के कवि-मन को अपने पर भरोसा है और अपने पर भरोसा रखने वाला ही देश और समाज को भरोसा दे सकता है। 'मातृभूमि के लिए' कविताएँ भी इसी भरोसे को ध्वनित करनेवाली हैं।

वर्तमान समय में विश्वासघात, अविश्वास और संदेह पग-पग पर हैं। विश्वास के एक कण को प्राप्त करने की इच्छा हर क्षण मानव में बनी रहती है। अलगाववाद, संप्रदायवाद, आतंकवाद का सर्वत्र ज़ोर है, पर यह दुर्भावना, दुर्गति कतिपय स्वार्थी कुटिल जनों की हताशा का परिणाम है। बहुजन इसका पक्षधर नहीं है। इसके बावजूद बहुजन का विरोधभाव आतंक के सम्मुख गूँगा रहता है। गोली की आवाज़ सुनकर भी बहरा होता है। भावी आशंका के भय से मौन साधे रहता है। आक्रांत होकर भी क़ब्र की शांति को ओढ़े रहता है। इस काव्य-संग्रह की कविताएँ इसी गूँगेपन, बहरेपन, मौन तथा भयाक्रांत भ्रांति से संघर्ष करने का निमंत्रण देती हैं। इस काव्य-संग्रह की कविताओं में कवि का काव्याह्वान मात्र शाब्दिक नहीं है, यह उसका आत्मिक संघर्ष है, वेदना की चीत्कार भी है। कवि देख रहा है–

कहीं जाति तो कहीं भाषा का तांडव मँडराया,
पृथग्वाद की लपटों ने, अब जन-जन को झुलसाया।
आज देख क्यों देशद्रोह की धधक रही है आग,
हे भारतवंश, भारत सपूत तू जाग।

इसी जागरण के बल पर कवि की ललकार है–

क़ातिलों की गोलियों में, जान कितनी देखना है
दुश्मनों की जड़ों को, उखाड़ हमको फेंकना है।
गोलियाँ खाकर मिटाना है अराजक राज हमको
देश के बलिदान की सौगंध है बस आज हमको।

वह इसी संकल्प को लेकर निरंतर आगे बढ़ रहा है। प्रत्येक देशवासी को इसी संकल्प से जोड़ना उसका लक्ष्य भी है। 'एक नया संसार बनाने' हेतु पारस्परिक खोखले अहं के परित्याग के बाद ही छिन्न-भिन्न मानव एक परिवार बना सकता है। कवि जन-जन से कह रहा है–

देशद्रोह अब टिके नहीं, देशप्रेम अब बिके नहीं।
चैन की बंसी को फेंको, लुटता चमन अब न देखो।

चमन की सुरक्षा का दायित्व अब सभी का है। स्वार्थ का परित्याग, जातिगत संघर्ष का त्याग करके हिंद के निवासियों को देश की अखंडता हेतु कवि प्रेरित करते हुए कहता है–

भाषा अनेक प्रांत हैं, फिर भी देश एक है,
रास्ते अनेक हैं किंतु लक्ष्य एक है।

अतः ऐसे में–

आज फिर से ढूँढना उसको हमें।
जो प्रेम की भाषा कहीं पर खो गई है।

इस देश-प्रेम की भाषा से ही परिवर्तन हो सकता है–

यहाँ न भाषा का झगड़ा हो, जाति-पाति का भेद नहीं।
दूर-दूर तक रहे नहीं अब, ऊँच-नीच का भेद कहीं।

यह कार्य दुष्कर नहीं है, पर बार-बार व्यक्ति छलावे का शिकार होता है, बार-बार वह फँस जाता है, बार-बार वह बिखरता है और बार-बार चीख़-पुकार करने को विवश होता है। इसके चलते–

यदि अंग फिर कटा, देश भारत बँटा,
तो धरा पे क्या मुँह दिखाएँगे हम
आओ मिलकर धरा से मिटाएँगे तम।

इसके मूल में मानवता एवं मर्यादा का न होना ही प्रबल कारण है। इन्हीं के अभाव में संस्कृति घुट-घुट कर रो रही है। कवि की पीड़ा है कि–

क्यों न मर्यादा को हमने जाना यहाँ,
क्यों न धरती को 'माँ' सबने माना यहाँ।
आज संस्कृति घुट-घुट के रोती है
क्यों न मानवता की बात होती है।

'मानवता एवं संस्कृति' के महान् देश भारत के पास क्या नहीं है। त्याग, तपस्या, प्रेम, भक्ति, चंदन जैसी शोभित मिट्टी, पावन गंगा, वेदों का अनुपम ज्ञान, उन्नत गंभीर सागर, प्रकृति के पावन देश भारत में क्या नहीं है? हिमालय, सीता की पावनता, राधा का निश्छल प्यार, दुर्गा-सी क्षत्राणी, मीरा की प्रीति तो यहाँ है ही, इस भारत में–

मंदिर, मस्जिद, गिरिजाघर यहाँ सबका ही सम्मान है,
एक हाथ में गीता रहती, दूजे हाथ क़ुरान है,
मिसाल नहीं दुनिया में इसकी, वीरों की यह खान,
त्याग, तपस्या प्रेम, भक्ति, किस-किसका करूँ बखान।

इस उच्चकोटि की भावना के होते हुए भी आख़िर कुछ ऐसा है, जिससे-

हर मार्ग काँटों से भरा,
हर शहर नफ़रत से जला।
जबकि वहाँ जलने वाला कोई नहीं,
हर ओर से मैं ही जला हूँ।

सभी धर्म, सभी पंथ, सभी जाति, सभी संप्रदायों को छोड़कर मानव एवं मानव-धर्म के निर्वहन में ही शब्द का हित कवि को दिखाई देता है–

किस जाति का, किस पंथ का, मैं नहीं ये जानता हूँ।
राष्ट्र का हूँ राष्ट्र मेरा, बस यही मैं मानता हूँ।

कवि को मानव-धर्म इसीलिए प्रिय है क्योंकि इसी के चलते देश का हर धर्म वाला स्वयं वीर प्राणार्पण करता है। 'काकोरी कांड', 'जलियाँ वाला बाग' के नृशंस हत्याकांड का गवाह तो हर धर्म का व्यक्ति रहा है। स्वातंत्र्य-संघर्ष की लड़ाई को हर धर्म ने बख़ूबी लड़ा है। बहुभाषाभाषी जनों ने भी एक भाषा का मंत्र उस समय फूँका था। आज वही भाषा राष्ट्र की शान-मान, एकता की जान बनकर विराजमान है-

भाषा हिंदी देश की बिंदी
घर ये हिंदुस्तान है।

कोई माने या न माने
हिंदी निज सम्मान है।

इसी एक भाषा के लक्ष्य से देश एक हो सकता है, पर राजनीति के कुचक्र ने विदेशी भाषा को एकता का चिह्न माना तथा अपनी ही भाषा को वह सम्मान नहीं दिया, जिसकी वह अधिकारिणी थी, इसके बावजूद–

भाव सभी के एक जैसे
भाषा चाहे अनेक हैं।

अनेकता में एकता तो इस देश की संस्कृति की महानता है, पर कुछ क्षणिक स्वार्थी तत्त्वों ने निजी स्वार्थों की लपेट में आकर इसकी लालिमा को ग्रस लिया है। उसकी भव्य रचना को तहस-नहस कर दिया है। इसकी पुनर्रचना आवश्यक है–

आज मैं त्रिकाल बन नवसृष्टि की रचना करूँगा
आज लानी है मुझे वह लालिमा जो खो गई है,
और आदत वह मिटानी जोकि जड़ता बो रही है
पूर्ण जड़ता को मिटा मैं, चेतना फिर से भरूँगा,
आज मैं त्रिकाल बन नवसृष्टि की रचना करूँगा।

जाति-पथ की खाइयों को, एकता से मैं भरूँगा
तम मिटाने के लिए, मैं स्वयं तिल-तिलकर जलूँगा।
वेदना-पीड़ा समेटे, कष्ट को पल-पल सहूँगा
आज मैं त्रिकाल बन नवसृष्टि की रचना करूँगा।

विघ्न-बाधाओं को ललकारना कवि का लक्ष्य है। 'तुम्हारा मन नहीं भरा', 'लक्ष्य शिखर पाओ', 'संघर्षों से ही लक्ष्य पाया', 'नवयुग धरती पर लाएँगे', 'वीर हो तो', 'विशेषता हमारी है', 'झूम-झूम के गाओ रे', 'भारत के रखवाले', 'हे भारत माता', 'मातृभूमि के लिए', 'सोता देश जगाएँ', 'आलोकित करने', 'हम शांत रहे हैं दुनिया में', 'मानवता की बात', 'माँ भारती', 'देश के हित में मर मिटें', 'देश के सपूतों दे दो देश को बलिदान', 'भारत सपूत तू जाग', 'पुकार रहा है देश तुम्हें', 'देश है विपदा में', 'एक नया संसार बना' आदि कविताओं में कवि ने देशप्रेम, राष्ट्रीयता की भावना, देश-हित, देश की महानता का स्मरण कराकर भारतभूमि, मातृभूमि, माँ भारती की सतत रक्षा-हेतु देश के सपूत, भारत के रखवालों को उनके अतीत के गौरव, सांस्कृतिक गौरव, स्वातंत्र्य संघर्ष के

परिवेश का स्मरण कराकर उसमें वीरोचित भावना को भरते हुए संदेश दिया है–

मतवालों की यह दुनिया, कायर के गीत नहीं गाती।
उथल-पुथल से घबराकर, तो कोई मंज़िल नहीं आती।
कालरात्रि से घबराकर, उषा जय मुकुट नहीं लाती।
कोई भी पीढ़ी सोते रहने से, अपना लक्ष्य नहीं पाती।

अपने निर्दिष्ट एवं गंतव्य की प्राप्ति हेतु कवि का सुझाव है–

समय की चुनौती स्वीकार करो तुम
मंज़िल तुम्हारे पग-पग में होगी।
अडिग दृढ़ डगर पर, अगर तुम बढ़ो तो
अमरता तुम्हारी सफल शक्ति होगी।

तुम्हारी सफल शक्ति से स्वयमेव–

खेतों में हरियाली होगी, कण-कण सोना उगलेगा।
डाली-डाली झूम उठेगी, भाग्य विश्व का बदलेगा।

इसी से शांति एवं विश्वशांति का प्रसार होगा। इसी रुधिर एवं 'नवांकुर' से 'नव राह नई चेतना' की प्राप्ति होगी। इसी से स्वार्थ को त्याग लोग नई किरण, नई आशा, नए दीप के प्रकाश से आलोकित होंगे। जब जन-मानस का हृदय इसी प्रकाश से आलोकित होगा, तभी वे पुकार उठेंगे–

धन-दौलत, वैभव न मिले माँ, भरतभूमि की धूलि मिले।
धन से प्यार नहीं होता माँ, इन सबमें हैं शूल खिले।

राष्ट्रभक्ति ही सब देशभक्तों का कर्त्तव्य है। इससे शून्य शिक्षा भी त्याज्य है–

शिक्षा क्या वह, भर न सकी जो राष्ट्रभक्ति को जन-जन में।
स्वाभिमान जो बचा सका न, शक्ति नहीं उस तन-मन में।

है कठोर पाषाण हृदय वह, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं,
मानव क्या पाषाणखंड है, जिसमें जीवन का सार नहीं।

उपर्युक्त पंक्तियाँ कवि मैथिलीशरण गुप्त का स्मरण कराती हैं। कवि का राष्ट्रमाता के चरणों में वंदन अनुकरणीय है। कवि की हर कविता इसी प्रेम का प्रतिबिंब है। अतीत के गौरव और भविष्य-निर्माण हेतु कवि जीवन न्यौछावर करना चाहता है–

अतीत का गौरव लिए, नव इतिहास का सृजन करेंगे।
राष्ट्र के हित ही जिए हैं, राष्ट्र के हित ही मरेंगे।

'निशंक' का कविहृदय मातृभूमि पर अर्पित होनेवालों का भी स्मरण कराता है–

हृदयंगम कर राष्ट्रभक्ति, भारत सौंपा हमको।
स्वीकारो हे वीर सपूतो, श्रद्धा अर्पित तुमको।

यह निर्विवाद सत्य है कि 'निशंक' के 'मातृभूमि के लिए' काव्य-संग्रह की कविताओं में पांडित्य का प्रदर्शन नहीं, हृदय के निश्च्छल उद्‌गार हैं। शब्दाडंबर नहीं, भावों का अकृत्रिम भंडार है। व्यक्ति से अंधभक्ति नहीं, वरन् राष्ट्रभक्ति की पुकार है। विश्वास है कि इस कवि की राष्ट्रभक्ति, देशप्रेम, स्वाधीनता, स्वातंत्र्य चेतना, मानवता, धार्मिक एकता एवं संगठन, सांस्कृतिक एवं सामाजिक सद्‌भाव आदि से ओत-प्रोत 'मातृभूमि के लिए' काव्य-संग्रह की कविताएँ राष्ट्रीय चेतना से संपृक्त जन-जन के गले के गीत-स्वर बनेंगी।

डॉ० श्यामधर तिवारी
विभागाध्यक्ष हिंदी
हेमवतीनंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर
पौड़ी (गढ़वाल)

अपनी बात

युगदृष्टा स्वामी विवेकानंद ने कहा था–

'यदि पृथ्वी पर कोई ऐसा देश है, जिसे हम धन्य और पुण्य कह सकते हैं, यदि ऐसा कोई स्थान है जहाँ पृथ्वी के सब जीवों को अपना कर्म-फल भोगने के लिए आना पड़ता है, यदि ऐसा कोई स्थान है जहाँ भगवान की ओर उन्मुख होने हेतु प्रयत्न में संलग्न रहने वाले जीव मात्र को अंतत: आना ही होगा, यदि कोई ऐसा देश है जहाँ मानव-जाति की क्षमा, धृति, करुणा, दया, शुद्धता, पवित्रता आदि सद्वृत्तियों का सर्वाधिक विकास हुआ है और यदि कोई ऐसा देश है, जहाँ आध्यात्मिकता और सर्वाधिक आत्मान्वेषण विकसित हुआ है, तो वह भूमि भारत ही है...।'

बंकिमचंद्र चटर्जी ने इसे सुजलां, सुफलां कहकर इसकी वंदना की, तो महर्षि अरविंद ने इस भारतभूमि को कंकण-पत्थर का ढेर नहीं अपितु चैतन्यमयी माँ के रूप में इसके साक्षात् दर्शन भी किए। अथर्ववेद ने तो इस पुण्यभूमि को माता कहकर इसकी संतान होने का हमें बोध कराया है।

माता और संतान का रक्त-संबंध बोध कराना ही मेरी इस पुस्तक 'मातृभूमि के लिए' का लक्ष्य है। यह बोध ही भारतभूमि पर उदित राष्ट्र और इसकी राष्ट्रीयता है।

हमारा अतीत उज्ज्वल, गौरवशाली और महान रहा है, प्राणों की बाज़ी लगाकर भी सम्मान की रक्षा करने की यहाँ प्रथा रही है। दुर्भाग्य से आज कुछ स्वार्थी तत्त्व भारतमाता के शरीर में जाति, भाषा और क्षेत्र का ज़हर फैलाने का यत्न कर रहे हैं। हमारी संस्कृति व राष्ट्रीय सम्मान को छिन्न-भिन्न करने का यत्न कर रहे हैं। इन्हीं स्वार्थी तत्त्वों के कारण भारत माँ को लंबे समय तक परतंत्रता का मुँह देखना पड़ा था। आज हमें ऐसे तत्त्वों से सजग होने की आवश्यकता है। आज हमें माँ की पीड़ा को जानना है, हमें अपनी संस्कृति और अपनी ज़मीन पहचाननी है।

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने कहा था–

अपि स्वर्णमयी लंका, न मे लक्ष्मण रोचते
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

कि हे लक्ष्मण! यद्यपि ये सोने की लंका है, पर मुझे अच्छी नहीं लगती, क्योंकि माता और मातृभूमि तो स्वर्ग से भी बढ़कर है।

स्वाधीनता के दिनों में भी राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत गीतों की गुनगुनाहट ने सारे राष्ट्र को जाग्रत किया था और एक से बढ़कर एक लोगों में उत्सर्ग की भावना को पैदा किया था। आज पुन: विस्मृत होते उस अतीत को हम स्मरण करें और दुनिया को बतला दें कि हमारी मातृभूमि अपनी गहरी निद्रा त्याग चुकी है। अब उसे कोई रोक नहीं सकता, कोई बाह्य शक्ति उसे दबा नहीं सकती, स्वार्थी तत्त्व उसे भ्रमित नहीं कर सकते, न उसे जाति-पंथ के रूप में बाँटा जा सकता है और न उसे क्षेत्रवाद, भाषावाद, धर्म व अलगाववाद के ज़हर को फैलाकर विभाजित किया जा सकता है।

मेरे इस काव्य-संग्रह का उद्देश्य भावी पीढ़ी में राष्ट्रीयता की भावना कूट-कूटकर भरना एवं जन-जन को देशभक्ति से ओतप्रोत करते हुए मातृभूमि के लिए सर्वस्व न्यौछावर की भावना को जाग्रत करना है।

इस पुस्तक के दूसरे भाग में मेरी 'समर्पण', 'नवांकुर', 'मुझे विधाता बनना है', 'तुम भी मेरे साथ चलो', 'देश हम जलने न देंगे' एवं 'जीवन-पथ में' की चुनिंदा रचनाएँ सम्मिलित हैं।

प्रस्तुत संग्रह के प्रकाशन में साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के सदस्य श्रद्धेय डॉ॰ योगेंद्रनाथ शर्मा 'अरुण' एवं मेरे मित्र तथा हिंदी सहित्य निकेतन, बिजनौर के सचिव डॉ॰ गिरिराशरण अग्रवाल का जो सहयोग प्राप्त हुआ है उसके लिए मैं उनका विशेष रूप से आभारी हूँ।

मुझे विश्वास है कि अकलुषित हृदय में गुनगुनाते ये गीत व्यक्ति-व्यक्ति को मातृभूमि के प्रति आनंद की अनुभूति कराके, राष्ट्रीय भावों को जागृति प्रदान करने में सहायक सिद्ध होंगे। यही सोचकर इस पुस्तक को आपके हाथों में समर्पित कर रहा हूँ।

रमेश पोखरियाल 'निशंक'

अनुक्रम

भाग : एक

मातृ-वंदना	23
हे आलोक तुम आओ!	24
भारतीयो आज हमको	25
भारत देश महान्	26
देश के सपूतो, करो तुम प्रयाण	28
हे हिंद के जवानो	30
देश पीड़ित कब तक रहेगा	32
बलिदान की सौगंध	34
देश विपदा में	35
बढ़ चले हम ग्रामवासी	36
नवयुग धरती पर लाएँगे	37
क़ुर्बान होगा देश पर	38
सृष्टि की रचना करूँगा	40
हम दुनिया की शान	41
विषेशता हमारी है	42
झूम-झूम गाओ रे	44
संघर्षों से लक्ष्य पाया	46
भारत के रखवाले	47
आज़ादी भूल न जाना	48
मातृभूमि की पूजा में	49
हे भारत माता	50
हिंदी देश की शान	51
बलिदान देने चला	52
सोता देश जगाया	53
मातृभूमि के लिए	54
अपनी पहचान बनाओ	55
मानवता की बात	57
त्रिपदी	58
हमने न किसी को ललकारा	59
देश के हित मर मिटें	60
ऐसा देश बनाएँ	62
प्यार की ज्योति जलाएँ	63
एक नया संसार बना	64

भाग : दो

हे दिव्य शक्ति	67
ऋजुपर्ण	68
देश हम जलने न देंगे	69
राष्ट्र-हित	71
समय की चुनौती	72
प्यारा हिंदुस्तान	74
बलिदानी पथ का वनफूल	76
भरतभूमि की धूल मिले	77
सुख की चाह नहीं	79

छिपा पौरुष जानो	80
साधना	81
नई किरण	82
मैं निशंक	83
मुझे विधाता बनना है	85
भारत की शान	86
सींच लो हृदय-कली	88
अंतिम इच्छा	89
जग में भारत देश	90
स्वयं जलकर	91
शिक्षा	92
राष्ट्रदेव है सबका	93
भारत	95
जीवन अर्पण	96
डरते नहीं	98
राह उन्हें दिखलाएगा	99
जागृति भरें	100
पुरुषार्थ	101
ज्योति-दिल में	102
मैं प्रभात हूँ	103
साथ लिए जा	104
तू अकेला नहीं	105
बदलो-बदलो यह धारा	106
तरुणों से	108
कविता-गंगा	109
ज्योति बन	111
भारत सपूतो	112
मुरझाएँ न	115
ख़ुद सँभलना	116
श्वास एक फिर भरनी	117
महाप्रलय	118
जीवन यों न चला जाए	119
इंसान कहलाएँ	120
यौवन	121
काश, पूर्ण तुम होते	122
बिखराव	123
देशभक्ति न सिसके	125
काँटों में जीते हैं	126
मैं मधुवन दर्शन	127
काँटों की गोदी में	129
जलकण बनें	130
गिरे हुए लोग	132
उभरती चेतना	133
देश को आओ बचाएँ	134
जीवन का सार	135
हिम के शिखर से बहता	137
आह, बंधन तोड़ डालें	138
भारत भू	139
हम एक हैं	140
डगमगाते मत समझना	141
राग-द्वेष-तम कारा है	142
दीपक जलने दो	144
जीवन-वीणा	146
ज़िंदगी ज़हर	147
विजय के गीत गाऊँ	148
मैं स्वयं ही	149

शांत हूँ पर	150
प्रिय गढ़वाल	151
अहंकार मिटा	152
राष्ट्रमाता	153
शक्ति पाएँ	154
कौनसी रीति?	155
आज निकट है लक्ष्य	156
तुमने मेरी झोंपड़ी जलाई	158

भाग : एक

मातृ-वंदना

कंठ तेरे हैं अनेकों, स्वर तुम्हारा एक है,
स्वर तुम्हारे पूज्यपादों में भी मेरा एक है।

कंठ सारे एक होकर, गान तेरा ही करें,
भू-जगत् की पूज्यमाता, कष्ट-दुख सब ही हरें।

माँ तुम्हारे शीश अगणित, एक सिर मेरा भी है,
चरण-कमलों में तेरे माँ, एक यह चेहरा भी है।

सैकड़ों मस्तक चढ़े माँ, मैं भी उनमें एक हूँ,
चाहता हूँ वंद्य माँ मैं, क्षण व कण प्रत्येक दूँ।

एक लय में गीत तेरे, सब पुकारें माँ तुम्हें,
सुरभि अमृतरस सभी, बाँट दो माता हमें।

हाथ अनगिन कर रहे हैं, वंदना माँ की अभी
हाथ हैं उनमें भी मेरे, पुत्र तेरे जो सभी।

कोटि चरणों से सुशोभित, पूत तेरे बढ़ रहे,
वत्सले! मन के हमारे, दीप सारे चढ़ रहे।

पुत्र मैं हूँ माँ तुम्हारा, तुम मुझे स्वीकार लो,
पूर्ण अर्पित बाल तेरा, माँ मुझे अब तार दो।

♦♦

हे आलोक तुम आओ!

विस्मृत अतीत की ज्योति अमर
शत आलोकित इतिहासों पर
कुछ किरण नई बरसाओ
ऋषि! वेदगान तुम गाओ
हे आलोक तुम आओ!

हे राष्ट्र के मेरुदंड!
हे वेदालोक ज्ञान प्रचंड!
नवल ज्योत्स्ना दिशा-दिशा में
शांति-समन्वय लाओ
हे आलोक तुम आओ!

हे मृत्युलोक के अमर गान!
अनंत शक्ति हे चिर निधान!
भटकते इस मानव-मन को
तुम नई दिशा दिखलाओ,
हे आलोक तुम आओ!

हे संस्कृति के अमर स्रोत!
हे ज्ञानदीप भास्वर प्रद्योत!
निर्जीव पड़ी इस संस्कृति के
तुम कण-कण बीच समाओ
हे आलोक तुम आओ!

♦♦

भारतीयो आज हमको

स्वार्थ में ऐसे फँसे हम, देश डूबा जा रहा है,
ध्येय, निष्ठा खो गई अब, द्वंद्व पल-पल छा रहा है।
बस यही तो स्वार्थलिप्सा कर गई बर्बाद हमको,
यह सनातन सत्य मानो, स्वार्थ को अब त्यागना है।
भारतीयो, आज का क्षण-क्षण हमें पहचानना है।

साधना का पथ पकड़कर, बंधुओं को था जगाया,
बहुत कुछ बलिदान देकर, मातृ भू को पुनः पाया।
किंतु अरि की दृष्टि मेरे देश से हटने न पाई,
शत्रु की मंशा को हमने आज फिर से नकारना है।
भारतीयो, आज का क्षण-क्षण हमें पहचानना है।

आसरा जिसको दिया, धोखा किया उसने हमीं से,
घर से हमको ही निकाला, छल किया मेरी ज़मीं से।
किंतु अब हम इस ज़मीं पर छल-कपट होने न देंगे,
हम सभी को कर दिखाने स्वयं को भी जानना है।
भारतीयो, आज का क्षण-क्षण हमें पहचानना है।

जातियों का विष भयंकर, फैलता ही जा रहा है,
इसलिए जग द्रोह करने इस ज़मीं पर आ रहा है।
किंतु हम इस भूमि पर, विद्रोह को पलने न देंगे,
आज हमको देश-भर से द्रोहियों को छानना है।
भारतीयो, आज का क्षण-क्षण हमें पहचानना है।

♦♦

भारत देश महान्

त्याग, तपस्या, प्रेम, भक्ति,
किस-किसका करूँ बखान,
अनगिन गाथाएँ जिसकी ये
भारत देश महान्।

चंदन जैसी सुरभित मिट्टी,
पावन गंगा है प्यारी,
भाषाओं को जन्म दिया,
जिसने वो संस्कृति है न्यारी।
वेदों का अनुपम ज्ञान लिए,
जो फैली सारे जहान,
त्याग, तपस्या, प्रेमभक्ति,
किस-किसका करूँ बखान।
अनगिन गाथाएँ जिसकी
ये भारत देश महान्।

हिमगिरि-सा माथा उन्नत है,
सागर मस्तक नत करता,
शंकर लिए त्रिशूल हाथ में,
जन-जन के दुख को हरता।
पावनता सीता की घर-घर,
अपनी रखती अद्‌भुत शान,
त्याग, तपस्या, प्रेमभक्ति,
किस-किसका करूँ बखान।

अनगिन गाथाएँ जिसकी
ये भारत देश महान्।

राधा-सा निश्छल प्रेम अमर,
औ' भरत सरीखे भाई हैं,
दुर्गा जैसी क्षत्राणी भी तो,
इसी देश ने पाई हैं।
मीरा की प्रीति अभी भी
ताज़ी, तानसेन की तान,
त्याग, तपस्या, प्रेमभक्ति,
किस-किसका करूँ बखान।
अनगिन गाथाएँ जिसकी
ये भारत देश महान्।

मंदिर-मस्जिद-गिरजाघर,
यहाँ सबका ही सम्मान है,
एक हाथ में गीता रहती,
दूजे हाथ क़ुरान है।
नहीं मिसाल विश्व में इसकी,
वीरों की यह खान,
त्याग, तपस्या, प्रेमभक्ति,
किस-किसका करूँ बखान।
अनगिन गाथाएँ जिसकी
ये भारत देश महान्।

♦♦

देश के सपूतो, करो तुम प्रयाण

देश के सपूतो, करो तुम प्रयाण,
हँस-हँस के दे दो मातृ-भू पे प्राण।

आज त्रस्त माता है तुमको पुकारती,
सहमी है मानवता, तुमको निहारती।
दुख-द्वंद्व दूर हो, करो अभियान
देश के सपूतो, करो तुम प्रयाण,
हँस-हँस के दे दो मातृ-भू पे प्राण।

चक्रवात धरा को घेरे हुए हैं,
आँधी से बुझते ये जलते दिये हैं।
जलते दिये को अब जीवन मान,
देश के सपूतो, करो तुम प्रयाण,
हँस-हँस के दे दो मातृ-भू पे प्राण।

काँटों ने फूलों का भेदन किया है,
देश में दुष्टों ने छेदन किया है।
तुमको बचानी है भारत की शान,
देश के सपूतो, करो तुम प्रयाण,
हँस-हँस के दे दो मातृ-भू पे प्राण।

आतंक ने ख़ून कितना बहाया,
एक के बाद एक जुल्मों को ढाया।
राष्ट्र के हित रक्खो हथेली पे जान,
देश के सपूतो, करो तुम प्रयाण,
हँस-हँस के दे दो मातृ-भू पे प्राण।

◆◆

हे हिंद के जवानो

हे हिंद के जवानो सुनो
देश की पुकार,
देखो, कबसे रहा है तुम्हें
देश ये निहार।

देश दुष्ट दानवों से
आज घिर रहा,
सुख-शांति का संदेश
आज फिर रहा,
उठो जवानो जागो
फिर करो हुंकार,
हे हिंद के जवानो सुनो
देश की पुकार।

स्वार्थ का घड़ा भरा जो
आज उसको फोड़ दो,
टूटे हुए दिलों को मित्र

आज फिर से जोड़ दो।
करो सभी मिलके अब
देश का सुधार,
हे हिंद के जवानो सुनो
देश की पुकार।

जातिगत संघर्ष को तुम
आज छोड़ दो,
एकता के सूत्र में
सभी को जोड़ दो।
देश की अखंडता पर
सहो नहीं प्रहार
हे हिंद के जवानो सुनो
देश की पुकार।

भाषा अनेक प्रांत हैं
फिर भी देश एक है,
रास्ते अनेक हैं
किंतु लक्ष्य एक है।
उजड़े हुए चमन में तुम
लाओ नई बहार,
हे हिंद के जवानो सुनो
देश की पुकार।

♦♦

देश पीड़ित कब तक रहेगा

अगर देश आँसू बहाता रहा तो,
ये संसार सोचो हमें क्या कहेगा?

नहीं स्वार्थ को हमने त्यागा कहीं तो
निर्दोष ये रक्त बहता रहेगा,
ये शोषक हैं सारे नहीं लाल मेरे
चमन तुमको हर वक़्त कहता रहेगा।
अगर इस धरा पर लहू फिर बहा तो
ये निश्चित तुम्हारा लहू ही बहेगा,
अगर देश आँसू बहाता रहा तो,
ये संसार सोचो हमें क्या कहेगा?

अगर देश को हमसे मिल कुछ न पाया
तो बेकार है फिर ये जीवन हमारा,
पशु की तरह हम जिए तो जिए क्या
थूकेगा हम पर तो संसार सारा।
जतन कुछ तो कर लो, सँभालो स्वयं को

भला देश पीड़ा यों कब तक सहेगा,
अगर देश आँसू बहाता रहा तो,
ये संसार सोचो हमें क्या कहेगा?

यौवन तो वो है खिले फूल-सा जो
चमन पर रहे, कंटकों में महकता,
शूलों से ताड़ित रहे जो सदा ही
समर्पित चमन पर रहे जो चमकता।
अँधेरा धरा पर कहीं भी रहे तो
ये जल-जल स्वयं ही सवेरा करेगा,
अगर देश आँसू बहाता रहा तो,
ये संसार सोचो हमें क्या कहेगा?

आँसू बहाए चमन, तुम हँसे तो
ये समझो कि जीवन में रोते रहोगे,
बलिदान देकर जो पाया वतन है
उसे भी सतत यों ही खोते रहोगे।
अगर ज्योति बनकर नहीं झिलमिलाए
तो धरती में जन-जन सिसकता रहेगा,
अगर देश आँसू बहाता रहा तो,
ये संसार सोचो हमें क्या कहेगा?

♦♦

बलिदान की सौगंध

देश के बलिदान की सौगंध है बस आज हमको।

क़ातिलों की गोलियों में जान कितनी, देखना है,
दुश्मनों को मूल से उखाड़ हमें फेंकना है।
गोलियाँ खाकर मिटाना है अराजक राज हमको,
देश के बलिदान की सौगंध है बस आज हमको।

रक्त की धारा बही जो, साक्षी उसकी धरा है,
देशहित बलिदान देने, जोश युवकों में भरा है।
एकता के गीत गाने, विजय के हों साज हमको,
देश के बलिदान की, सौगंध है बस आज हमको।

ज़ालिमों के जुल्म से हम श्वास अंतिम तक लड़ेंगे,
देश की ख़ातिर जिए हैं, देश की ख़ातिर मरेंगे।
जान देकर भी बचानी, देश की है लाज हमको,
देश के बलिदान की, सौगंध है बस आज हमको।

देशहित नित टोलियाँ, हर कारवाँ से अब बढ़ेंगी,
अंधड़ों के उच्च शिखरों पर, सफलता से चढ़ेंगी।
विश्व में विख्यात था, लाना वही है राज हमको,
देश के बलिदान की, सौगंध है बस आज हमको।

♦♦

ये देश है विपदा में

देश हमारा है विपदा में, साथी तुम उठ जाओ।

सब कुछ न्यौछावर कर दो,
देशभक्ति मन में भर दो,
तूफ़ानों के इस रस्ते में, साथी गीत विजय के गाओ,
देश हमारा है विपदा में, साथी तुम उठ जाओ।

विपदा में तुम डिगो नहीं,
तूफ़ानों में झुको नहीं,
मर-मिट जाएँ, रुकें न पल भी, क़सम देश की खाओ,
देश हमारा है विपदा में, साथी तुम उठ जाओ।

देशद्रोह अब टिके नहीं,
देशप्रेम अब बिके नहीं,
गूँज उठो तुम, भारत की अब दिशा-दिशा में जाओ,
देश हमारा है विपदा में, साथी तुम उठ जाओ।

चैन की बंसी को फेंको,
लुटता चमन न अब देखो,
मातृभूमि हित मर मिट जाओ, ये जन्म अमरता का पाओ,
देश हमारा है विपदा में, साथी तुम उठ जाओ।

♦♦

बढ़ चले हम ग्रामवासी

बढ़ चले हम ग्रामवासी, ले मशालें हाथ में,
देशवासी उठ गए हैं, चल रहे सब साथ में।

हम कब तलक डाले रहें, बेड़ियाँ निज पाँव में,
हम पूछते कब तक रहें, मायूस अपने गाँव में।
पतझड़ सदा रहने लगा, क्यों गाँव के इस पात में
अब बढ़ चले हम ग्रामवासी, ले मशालें हाथ में।

पूछती गिरिकंदरा, हम हीन क्यों इस देश में,
पूछता पर्वत बताओ, नग्न क्यों इस वेश में।
हम बात अपनी क्या करें, आँसू गिरें हर बात में
अब बढ़ चले हम ग्रामवासी, ले मशालें हाथ में।

पूछते घनघोर वन, अपराध हमने क्या किया,
वे मिटाते हैं हमें, जीवन सदा जिनको दिया।
क्रूर बन लूटा हमें, घोंपी कुल्हाड़ी गात में
अब बढ़ चले हम ग्रामवासी, ले मशालें हाथ में।

चीख़ते पशु और पक्षी, ताल सूखे क्यों पड़े,
इक बूँद पानी को तरसते, मौत के मुँह में खड़े।
हम कब तलक लुटते रहें, मिटते रहेंगे साथ में
अब बढ़ चले हम ग्रामवासी, ले मशालें हाथ में।

♦♦

नवयुग धरती पर लाएँगे

हम भारत की फुलवारी में, अनुपम वैभव विकसाएँगे,
हम अपने ख़ून-पसीने से, नवयुग धरती पर लाएँगे।

शोभित करने को दिशा-दिशा, हम नील गगन पर छाएँगे,
फिर देशप्रेम की हरियाली, इस धरती पर सरसाएँगे।
निर्बल हों चाहे बलशाली, सब मिलकर क़दम बढ़ाएँगे,
हम अपने ख़ून-पसीने से, नवयुग धरती पर लाएँगे।

जिजीविषा की वृत्ति अटल-सी, आज हमारे मन में है,
निश्चय आज भगीरथ जैसा भारत के जन-जन में है।
अब तो अपनी संस्कृति का ध्वज हम जगभर में फहराएँगे,
हम अपने ख़ून-पसीने से, नवयुग धरती पर लाएँगे।

निशिचर-हीन करेंगे धरती, हमको अब विश्राम कहाँ,
प्रात बनेगा पांचजन्य, हर स्वर्णिम होगी शाम यहाँ।
पौरुष को पूजेंगे हम सब, फिर गीत विजय के गाएँगे,
हम अपने ख़ून-पसीने से, नवयुग धरती पर लाएँगे।

♦♦

क़ुर्बान होगा देश पर

क़ुर्बान होगा देश पर जो,
इतिहास उसी को गाएगा।

वीर तो वह रहा जग में
जिसने सदा संघर्ष झेला,
तूफ़ान-आँधी ही पर
अभय उसने खेल खेला।
संघर्षों से यदि भागा तो
सोच कहाँ तू जाएगा?
क़ुर्बान होगा देश पर जो,
इतिहास उसी को गाएगा।

चीर दो उस गहन तम को
आज जो फैला हुआ है,
औ' मिटा दो वह कलुषता
जिससे मन मैला हुआ है।
रोशनी में खो गया हो
वह रोशनी न पाएगा,
क़ुर्बान होगा देश पर जो,
इतिहास उसी को गाएगा।

अब रक्त न पानी बने
शीश अपना झुके नहीं,
लाख संकट सामने हों
वह वीर है जो रुके नहीं।
दृढ़ता से जो बढ़ा, वह
सफलता ही पाएगा,
क़ुर्बान होगा देश पर जो,
इतिहास उसी को गाएगा।

♦♦

सृष्टि की रचना करूँगा

आज मैं त्रिकाल बन नव सृष्टि की रचना करूँगा।

आज लानी है मुझे, वह लालिमा जो खो रही है,
और आदत वह मिटानी जो कि जड़ता बो रही है।
पूर्ण जड़ता को मिटा मैं, चेतना फिर से भरूँगा
आज मैं त्रिकाल बन, नव सृष्टि की रचना करूँगा।

मुक्त करना है उसे, जो कुटिल वाणी ने डसा है,
औ' बचाना है मनुज वह, द्वेष के दल-दल फँसा है।
द्वेष को कर दूर अब तो, प्यार रग-रग में भरूँगा,
आज मैं त्रिकाल बन, नव सृष्टि की रचना करूँगा।

जाति-पथ की खाइयों को, एकता से मैं भरूँगा,
तम मिटाने के लिए, मैं स्वयं तिल-तिल कर जलूँगा।
वेदना-पीड़ा समेटे, कष्ट को पल-पल सहूँगा
आज मैं त्रिकाल बन, नव सृष्टि की रचना करूँगा।

♦♦

हम दुनिया की शान

हिंदुभूमि के निवासी, हम दुनिया की शान हैं।

रंग-रूप सब भिन्न-भिन्न पर
राष्ट्र मन सब एक हैं,
भाव सभी के एक सरीखे
भाषा चाहे अनेक हैं।
हम परहित न्यौछावर होकर जीवन देते दान हैं
हिंदुभूमि के निवासी हम दुनिया की शान हैं।

लक्ष्य रहा सर्वोच्च हमारा
और इरादे नेक हैं,
हिंद देश के निवासी
हम सभी एक हैं।
हम भारत के मानबिंदु का करते नित सम्मान हैं,
हिंदुभूमि के निवासी हम दुनिया की शान हैं।

शक्ति-शील-सौंदर्य लिए
निर्बल को दिया सहारा है,
'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का
रहा हमारा नारा है।
देशहित बलिदान दिए जाने के हमारे गान हैं,
हिंदुभूमि के निवासी हम दुनिया की शान हैं।

♦♦

विशेषता हमारी है

अनेकता में एकता विशेषता हमारी है।

राम की ये जन्मभूमि
ध्रुव की तपस्थली,
शक्ति का प्रतीक है
यहाँ तो महाबली।
सभी महापुरुषों की धरती ये प्यारी है,
अनेकता में एकता विशेषता हमारी है।

षोडश कलाओं वाले
कृष्ण भी यहीं हुए,
त्यागी दधीचि जैसे
और न कहीं हुए।
हर क़दम पर त्याग-तप की गाथा ही न्यारी है,
अनेकता में एकता विशेषता हमारी है।

दुनिया में छायी है
यहाँ की विवेकता,
कौन न जाने यहाँ
ऋषि-मुनियों की श्रेष्ठता।
भोगवादी संस्कृति भी यहीं आकर हारी है,
अनेकता में एकता विशेषता हमारी है।

वेश-भूषा भिन्न रही
भिन्न खान-पान है,
इस स्वर्गभूमि को
तरसता जहान है।
हर क़दम पर देखो यहाँ दृश्य मनोहारी है,
अनेकता में एकता विशेषता हमारी है।

जाति-धर्म के त्यौहार
हर क़दम पर हैं यहाँ,
यहाँ की विपुलता देख
अचंभित सारा जहाँ।
भारत की संस्कृति तो कल्याणकारी है,
अनेकता में एकता विशेषता हमारी है।

♦♦

झूम-झूम गाओ रे

भारत के लाल आज झूम-झूम गाओ रे।

सारा ही देश आज
झूमा है मस्ती में,
देखो ख़ुशी छाई है
हर एक बस्ती में।
स्वाधीनता की ख़ुशियाँ लहराओ रे।
भारत के लाल आज झूम-झूम गाओ रे।

आज तो गगन में भी
उल्लास छाया है,
देशभक्ति का देखो
कैसा रंग छाया है।
देश के सपूतो, आज देशभक्ति पाओ रे।
भारत के लाल आज झूम-झूम गाओ रे।

याद करो उनको आज
मरकर जो अमर हुए,
कल्पना करो ज़रा
अन्याय जो बर्बर हुए।
सँजोएँगे स्वतंत्रता क़सम मिलकर खाओ रे।
भारत के लाल आज झूम-झूम गाओ रे।

सोचो स्वतंत्रता हित
क्या-क्या नहीं खोया है,
देश के बलिदानियों को
सारा देश रोया है।
देश के सपूतों से प्रेरणा को पाओ रे।
भारत के लाल आज झूम-झूम गाओ रे।

♦♦

संघर्षों से लक्ष्य पाया

हमने तो संघर्षों से ही लक्ष्य-शिखर को पाया है।

संकट की घड़ियाँ झेल-झेल, विश्वास अटल हो जाता है,
तूफ़ान स्वयं ही हटते हैं औ' प्रातः सुहाना आता है।
विध्वंसों के तांडव में भी, नित गीत सृजन का गाया है,
हमने तो संघर्षों से ही लक्ष्य-शिखर को पाया है।

मतवालों की यह दुनिया है, कायर के गीत नहीं गाती,
उथल-पुथल से घबराकर मंज़िल तो निकट नहीं आती।
उथल-पुथल में भी हमने, हर गीत प्रगति का गाया है,
हमने तो संघर्षों से ही लक्ष्य-शिखर को पाया है।

असुरों की कपट-कुचालों से डरकर जिसने पथ मोड़ा है,
परिवार नहीं दुनिया तक ने, उससे निज नाता तोड़ा है।
हम लड़े सदा उन असुरों से, दुष्चक्र जिन्होंने ढाया है,
हमने तो संघर्षों से ही लक्ष्य-शिखर को पाया है।

कालरात्रि से घबराकर, उषा जय मुकुट नहीं लाती,
कोई पीढ़ी सोते रहने से, अपना लक्ष्य नहीं पाती।
हम बढ़ें हमेशा कठिन डगर, अँधियारा चाहे छाया है,
हमने तो संघर्षों से ही लक्ष्य-शिखर को पाया है।

♦♦

भारत के रखवाले

भारत के रखवाले हैं हम, भारत के रखवाले,
सारा जग जाने हमको, हम देशप्रेम के मतवाले।

सत्य, अहिंसा, प्रेम बिखेरें, मंत्र-मुग्ध कर दें मन को
ज्ञान-दीप के ज्योति-पुंज से, ज्योतित करें सभी जन को।
दीन-हीन को गले लगालें, हम देशप्रेम के मतवाले,
भारत के रखवाले हैं हम, भारत के रखवाले।

पूजन-अर्चन करें देश का, मातृभूमि इसको मानें,
इसकी ख़ातिर जीवन अर्पित, राष्ट्रदेव इसको जानें।
तन-मन इस पर आज लुटा दें, और नया जीवन पा लें,
भारत के रखवाले हैं हम, भारत के रखवाले।

मतवाले हम उसी शौर्य के, जो वीर शिवा ने दिखलाया,
कर्म किए जा मंत्र हमें था गीता ने भी सिखलाया।
आँच न आने देंगे उस पर, जहाँ थे राणा मतवाले,
भारत के रखवाले हैं हम, भारत के रखवाले।

♦♦

आज़ादी भूल न जाना

हे हिंद देश के लोगो तुम आज़ादी भूल न जाना।

कितने ही वीर शहीद हुए, फाँसी के फंदे पर झूले,
चेहरे थे उनके मुस्काए, दुख-दर्द सभी थे वे भूले।
भूखे-प्यासे भटके वन में, वे पहन केसरी बाना,
हे हिंद देश के लोगो तुम आज़ादी भूल न जाना।

माँ-बहिनों के अमर त्याग ने, भू का मान बढ़ाया,
मातृभूमि पर न्यौछावर हों, हमको पाठ पढ़ाया।
कौन न जाने दिशा-दिशा में, गूँजा इसका गाना,
हे हिंद देश के लोगो तुम आज़ादी भूल न जाना।

देशभक्ति के गीतों पर भी, जिनको कारावास मिला,
फाँसी की चर्चा सुनकर भी, चेहरा उनका और खिला।
याद करो बिस्मिल को जिसने, भारत को सब-कुछ माना,
हे हिंद देश के लोगो तुम आज़ादी भूल न जाना।

वह काकोरी कांड न भूलो, जिसने दिल को दहलाया,
याद रहे वह कांड भी जो, जलियाँवाला था कहलाया।
देश की ख़ातिर मर-मिटना ही, जिन्होंने जीवन माना,
हे हिंद देश के लोगो तुम आज़ादी भूल न जाना।

♦♦

मातृभूमि की पूजा में

मातृभूमि की पूजा में अब, अपना पुष्प चढ़ाना,
श्रेष्ठ कर्म के शुभ सुमनों से, माँ का मान बढ़ाना।

युगों-युगों से इस मंदिर में
यौवन-पुष्प चढ़ाए,
ओठों पर मुस्कान लिए
बलिदानी बढ़ते आए।
आज बाँधकर कफ़न शीश पर, आया ये परवाना,
श्रेष्ठ कर्म के शुभ सुमनों से, माँ का मान बढ़ाना।

जिसकी रजकण चंदन है
निर्मल गंगा की धारा,
हरा-भरा वक्षस्थल इसका
और हिमालय प्यारा।
कल-कल, छल-छल करती नदियाँ गाती फिर-फिर गाना,
मातृभूमि की पूजा में अब, अपना पुष्प चढ़ाना।
नैसर्गिक सुषमा की जननी
ऋषि-मुनियों की माता,
सदा पली जिसकी छाया में
यह गौरवमय गाथा।
इसकी गौरव-गरिमा को तो सारे जग ने जाना,
मातृभूमि की पूजा में अब, अपना पुष्प चढ़ाना।

♦♦

भारत माता

भारत माँ तेरी जय, जयकार हो।

हिमालय-सा ऊँचा मस्तक तेरा,
चरणों को चूमे सागर घेरा।
क़दमों में माता तेरे, सारा संसार हो,
भारत माँ तेरी जय, जयकार हो।

गंगा-सी पावन हैं नदियाँ हमारी,
सुमन गुच्छ-सी माला भू पर उतारी।
हिमगिरि-सा ऊँचा ये संसार हो,
भारत माँ तेरी जय, जयकार हो।

तेरे धाम चारों दुनिया में न्यारे,
यहाँ पधारे सुख पाने, दुनिया से सारे।
रहें सभी मिलके आपस में प्यार हो,
भारत माँ तेरी जय, जयकार हो।

सुंदर बहुत है स्वर्ग-सा देश मेरा,
समर्पण तुझे माँ नमन भी है मेरा।
अब न कहीं भी घिरा अंधकार हो,
भारत माँ तेरी जय, जयकार हो।

♦♦

हिंदी देश की शान

एकता की सूचक हिंदी भारत माँ की आन है,
कोई माने या न माने हिंदी देश की शान है।
भारत माँ का प्राण है
भारत-गौरव गान है।

सैकड़ों हैं बोलियाँ पर हिंदी सबकी जान है,
सुंदर सरस लुभावनी ये कोमल कुसुम समान है।
हृदय मिलाने वाली हिंदी नित करती उत्थान है,
कोई माने या न माने हिंदी सत्य प्रमाण है।
भारत माँ की प्राण है,
भारत-गौरव गान है।

सागर के सम भाव है इसमें रस तो अमृतपान है,
मन को सदा लुभाती हिंदी बहुरत्नों की खान है।
भाषा हिंदी देश की बिंदी, घर ये हिंदुस्तान है,
कोई माने या न माने हिंदी निज सम्मान है।
भारत माँ की प्राण है,
भारत-गौरव गान है।

♦♦

बलिदान देने चला

बलिदान से मेरे कहीं भी शांति हो तो,
मैं आज ही बलिदान देने को चला हूँ।

हर मार्ग काँटों से भरा, हर शहर नफ़रत से जला,
जलता रहेगा वतन अपना, आग में कब तक भला?
परस्पर विद्रोह में भी, हर ओर से मैं ही जला हूँ,
बलिदान से मेरे कहीं भी शांति हो तो,
मैं आज ही बलिदान देने को चला हूँ।

न सभ्यता का मान है, न ज्ञान संस्कृति का जिन्हें,
देशहित दिखता नहीं, निज स्वार्थ में उलझे इन्हें।
मैं पीढ़ियाँ दर पीढ़ियाँ इन स्वार्थियों से ही छला हूँ,
बलिदान से मेरे कहीं भी शांति हो तो,
मैं आज ही बलिदान देने को चला हूँ।

किस जाति का, किस पंथ का, मैं नहीं ये जानता हूँ,
राष्ट्र का हूँ, राष्ट्र मेरा, बस यही मैं मानता हूँ।
पर समर्पित मैं उसी की, गोद को जिसमें पला हूँ,
बलिदान से मेरे कहीं भी शांति हो तो,
मैं आज ही बलिदान देने को चला हूँ।

♦♦

सोता देश जगाया

हमने सोता देश जगाया, सोते बंधु जगाए।

जब-जब सोया देश है अपना
तब-तब उसने खोया है,
मस्त हँसी भी क़ैद पड़ी
वह कुंठाओं में रोया है।
अब न सोते रह जाना तुम, तुमको देश पुकारे,
हमने सोता देश जगाया, सोते बंधु जगाए।

देख लो अब तुम आत्मशक्ति से
कौन छलावा करता है,
कौन यहाँ अपने ही घर में
घूँट गरल के भरता है।
अब न ज़हर को घुलने देंगे, देशभक्त उठ आए,
हमने सोता देश जगाया, सोते बंधु जगाए।

विपदा में हम भले रहें
पर मिलकर क़दम बढ़ाएँगे,
देश की ख़ातिर मर मिटने की
सौगंधें हम खाएँगे।
अब न कहीं भी झुकने को, हमने शीश उठाए,
हमने सोता देश जगाया, सोते बंधु जगाए।

♦♦

मातृभूमि के लिए

मातृभूमि के लिए जो
लड़ते रहे हैं,
नाम अपना अमर वे
करते रहे हैं।

मृत्यु से भी वे कभी
भागे नहीं हैं,
कौन दुख की घड़ी में
जागे नहीं हैं?

देशहित बलिदान देने
मस्त झूमे,
सफलता ने भी उन्हीं के
चरण चूमे।

विश्व अब भी गीत इनके
गा रहा है,
हर क़दम पर प्रेरणा ही
पा रहा है।

♦♦

अपनी पहिचान बनाओ

उथल-पुथल से क्या घबराना, साथी आगे बढ़ जाओ,
चट्टानों को पार करो फिर, लक्ष्य-शिखर को तुम पाओ।

सागर की लहरों से डरकर
नौका पार नहीं होती,
शिशु के गिरने-उठने पर तो
माता कभी नहीं रोती।
अब लहरों की गिनती छोड़ो, कूद समर में बढ़ जाओ,
चट्टानों को पार करो तुम, लक्ष्य-शिखर को तुम पाओ।

देशभक्त गहरी निंद्रा में
देखो कभी नहीं सोता,
लोहे के सँग रहकर सोना
निज पहिचान नहीं खोता।
जीना है तो अब जग में तुम अपनी पहिचान बनाओ,
चट्टानों को पार करो तुम, लक्ष्य-शिखर को तुम पाओ।

जीवन उज्ज्वल करना है तो
सदा त्याग-पथ अपनाओ,
बलिदानी पथ पर बढ़ करके
गीत देश के तुम गाओ।
कड़ी परीक्षा आई है अब, क़सम देश की तुम खाओ,
चट्टानों को पार करो तुम, लक्ष्य-शिखर को तुम पाओ।

क्षमा किसी ने किया न उसको
जो ग़द्दार रहा जग में,
मृत उसका है तन-मन सारा
ख़ून नहीं उसकी रग में।
प्राण हथेली पर रख करके, दिशा-दिशा में तुम जाओ,
चट्टानों को पार करो तुम, लक्ष्य-शिखर को तुम पाओ।

♦♦

मानवता की बात

आज मानवता रह-रह के रोती है
क्यों न मानवता की बात होती है।

बात आदर्श की कोई सुनता नहीं,
मार्ग परहित का कोई क्यों चुनता नहीं।
अब तो हर बात जैसी ये थोथी है,
क्यों न मानवता की बात होती है।

क्यों न मर्यादा को हमने जाना यहाँ,
क्यों न धरती को माँ सबने माना यहाँ।
आज संस्कृति घुट-घुटके रोती है,
क्यों न मानवता की बात होती है।

भाई-भाई को कोई न सहता जहाँ,
बेगुनाह ख़ून धरती पे बहता वहाँ।
ये धरा तो सभी को ढोती है,
क्यों न मानवता की बात होती है।

देख निर्धन को सबने है कुचला जहाँ
ढोंग का बन गया व्यक्ति पुतला वहाँ।
आज मानवता पहिचान खोती है,
क्यों न मानवता की बात होती है।

♦♦

त्रिपदी

मिलकर धरा से मिटाएँगे तम।

अणुबम के ऊपर टिका विश्व सारा,
घिरा देश अपना ये प्राणों से प्यारा।
अगर देश टूटा, वतन अपना छूटा,
तो जीवित धरा पर रहेंगे न हम,
मिलकर धरा से मिटाएँगे तम।

कब तलक अंग भू के यूँ ही कटेंगे,
औ' कब तक धरा पर ये अणुबम फटेंगे,
अगर अंग फिर से कटा मातृ-भू का,
धरा पर क्या मुँह दिखाएँगे हम,
मिलकर धरा से मिटाएँगे तम।

मनुजता ये कब तक सिसकती रहेगी?
अपमान कब तक ये माता सहेगी?
यदि तुम न जागे, ये दुश्मन न भागे,
तो जीवन की खुशियों पे छाएँगे ग़म
मिलकर धरा से मिटाएँगे तम।

♦♦

हमने न किसी को ललकारा

विश्व जानता है कि हमने नहीं किसी को ललकारा,
पर जिसने ललकारा हमको, हमने उसको फटकारा।

शांत रहे हम दुनिया में
संदेश शांति का देते हैं,
करते हैं सर्वस्व निछावर
कब कुछ बदले में लेते हैं?
वैसे तो संसार रहा है हमको प्राणों से प्यारा,
पर जिसने ललकारा हमको, हमने उसको फटकारा।

स्वाभिमान की बलिवेदी पर
हमने लाखों सुमन चढ़ाए,
विपदाओं की ज्वालाओं में
हमने आगे क़दम बढ़ाए।
बढ़े शत्रु को पटक धरा पर इसको पहचाने जग सारा,
पर जिसने ललकारा हमको, हमने उसको फटकारा।

लक्ष्य दूर, पथ दुर्गम रहता
किंतु पहुँचकर दम लेते,
अंधकार में बनके दीपक
ज्योति सभी को हम देते।
सदा सभी के हित में चमका, भारत माँ का हर तारा,
पर जिसने ललकारा हमको, हमने उसको फटकारा।

♦♦

देश के हित मर मिटें

चाहे सहस्रों सिर कटें
हम देश के हित मर-मिटें।

जकड़कर निज स्वार्थ में
कुछ स्वार्थियों ने देश घेरा,
निकाला घर से हमें
डाला इन्होंने स्वयं डेरा।

बिखरते ही रह गए हैं
हम कहीं तो वे कहीं हैं,
अफ़सोस अपना ख़ून तक भी
पास अपने ही नहीं है।

बस्तियाँ ख़ाली हुईं अब
जंगलों में हैं बसेरे,
इस ओर काला नाग है
उस ओर काँटे हैं घनेरे।

इस विवशता में स्वयं
पहिचान खोते जा रहे हैं
हाय, अपनी देह पर
आघात अनगिन पा रहे हैं।

काल की गति है निराली,
सुबह उजली, रात काली।
अब राष्ट्र के सिर पर घनेरे
ये विपद बादल छँटें
झेलकर दुख-दर्द सारे
देश-हित हम मर मिटें।

♦♦

ऐसा देश बनाएँ

जिसका यश अग-जग में फैले, ऐसा देश बनाएँ,
डगर-डगर में पग-पग पर हम, गीत विजय का गाएँ।

ज्ञान और विज्ञान के
हर क्षेत्र में बढ़ जाएँ,
चीर सभी संकट के बादल
उषा धरा पर लाएँ।
चिर उदार भारत संस्कृति को, दिशा-दिशा ले जाएँ,
जिसका यश संसार में फैले, ऐसा देश बनाएँ।

स्वर्णिम वर्णों में अंकित
सबसे उन्नत बलिदान करें,
कोटि-कोटि कंठों से मुखरित
भारत का जयगान करें।
अपने पौरुष सद्निष्ठा का, ध्वज जग में फहराएँ,
जिसका यश संसार में फैले, ऐसा देश बनाएँ।

यहाँ न भाषा का झगड़ा हो
जाति-पाँति का भेद नहीं,
दूर-दूर तक रहे नहीं अब
ऊँच-नीच का भेद कहीं,
स्नेहसिक्त मानव की वाणी, जन-जन तक पहुँचाएँ
जिसका यश संसार में फैले, ऐसा देश बनाएँ।

♦♦

प्यार की ज्योति जलाएँ

सोच लो अनमोल जीवन, व्यर्थ ही हम क्यों गँवाएँ?

आज रोकें इन विषैली हवाओं को,
उन्मुक्त हो मुक्ति सभी को हम दिला दें।
इन रगों में ख़ून जो बहता है उसमें,
देश की संवेदना को हम मिला लें।
शाप जैसे दुर्दिनों को देख लो फिर से न पाएँ,
सोच लो अनमोल जीवन, व्यर्थ ही हम क्यों गँवाएँ?

आज फिर से ढूँढना उसको हमें
जो प्रेम की भाषा कहीं पर खो गई है,
उस हवा को आज फिर से है मिटाना
जो मधुरता की जगह विष बो गई है।
दीप आशा का सभी मिलकर जलाएँ,
सोच लो अनमोल जीवन, व्यर्थ ही हम क्यों गँवाएँ?

देश की संस्कृति को है अब बचाना
जातिगत संघर्ष को है अब मिटाना,
एकता का भाव लेकर बढ़ चलें हम
देश का एकत्व है मन में बिठाना।
छोड़ नफ़रत, प्रेम का दीपक जलाएँ,
सोच लो अनमोल जीवन, व्यर्थ ही हम क्यों गँवाएँ?

♦♦

एक नया संसार बना

देख ले मानव की फैला, अंधकार हर ओर घना
आज तोड़ खोखले अहं को, एक नया संसार बना।

इस मानव के सर पर जाने, क्या-क्या भूत सवार हुआ,
आज ये मानव इस धरती पर, दानव जैसा भार हुआ।
अब बचा प्रभु मानवता को, मनुज रक्त से सना हुआ,
आज तोड़ खोखले अहं को, एक नया संसार बना।

इसने जिन कुत्सित हाथों से, सबका काम तमाम किया,
इसने इस पावन धरती को, देखो फिर बदनाम किया।
यहाँ शांति की सरिता सूखी, मुरझाया तरु हरित तना,
आज तोड़ खोखले अहं को, एक नया संसार बना।

जब-जब भी इस मानव पर, दानव का शासन होता है,
घुटती है हर पल मानवता, जन-जन का मन रोता है।
आज हुआ विच्छिन्न मनुज का, सुखी स्वस्थ परिवार घना,
आज तोड़ खोखले अहं को, एक नया संसार बना।

♦♦

भाग : दो

हे दिव्य शक्ति

हे विश्ववंदिता, विश्वअर्चिता
दिव्य शक्ति! हे चिर निधान,
नवरस, गति दे, नई प्रेरणा
जग–जीवन कर सदा महान्।

जीवन–पथ में स्वार्थ सकल हैं
विश्व विकल को नव बल दे,
जीर्ण–शीर्ण व्याकुल जीवन में
मंत्र एक निश्छल भर दे।

कलहयुक्त इस जीवन में माँ !
प्रेम–प्रणय दे, कर कल्याण,
नवरस गति दे, नई प्रेरणा
जग–जीवन कर सदा महान्।

भूल गया बंधुत्व प्रेम जो
उस कलुषित मानव–मन को,
फिर से नूतन पथ पर ले जा
शिवे सरस उसके तन को।

त्रस्त हुए इस जीवन में माँ!
भर दे नवल चेतना, प्राण,
नवरस, गति दे, नई प्रेरणा
जग–जीवन कर सदा महान्।

♦♦

ऋजुपर्ण

निखिल निखिल 'समर्पण' के 'अंकुर' से
फूटे हैं ऋजुपर्ण,
मैंने अर्पण में कभी न देखा
जाति-पाति या वर्ण।

था मेरा यह विश्व समर्पण
जिसको सबने अपनाया,
निज स्वार्थों से आत्मघात से
टूटी देश की काया।

जिसने मुझको जन्म दिया
और महत् मानव का तन,
उसी राष्ट्रदेव को मेरा
सदा समर्पित यह तन-मन।

ये ऋजुपर्ण सुशोभित है
लिए स्वयं में अमृतफल,
ये ही राष्ट्र को दे सकते हैं
शक्ति-भक्ति औ' आत्मिक बल।

♦♦

देश हम जलने न देंगे

हर क़दम इतिहास स्वर्णिम,
हम इसे गलने न देंगे।
हम स्वयं जल जाएँगे पर,
देश हम जलने न देंगे।

सभी को बांधव समझना,
रही मानवता हमारी।
बंधु से ही कपट करना,
नियति दूषित थी तुम्हारी।
सहिष्णुता के साधकों को,
हम अधिक छलने न देंगे।
हम स्वयं जल जाएँगे पर,
देश हम जलने न देंगे।

तुमने छला हमको मगर,
हम बंधु तुमको मानते हैं।
मनुज का सम्मान करना,
हम शुरू से जानते हैं।
कर चुकाएँगे भले ही,
व्यवस्था ढलने न देंगे।
हम स्वयं जल जाएँगे पर,

देश हम जलने न देंगे।

व्यक्ति तो होता वहाँ का,
अन्न जो खाता जहाँ का।
अन्न खाकर द्रोह करना,
अब अधिक चलने न देंगे।
हम स्वयं जल जाएँगे पर,
देश हम जलने न देंगे।

♦♦

राष्ट्र-हित

कुटिलता की नीति तजकर
राष्ट्र-हित जूझा करें,
आज तन-मन और धन से
राष्ट्र की पूजा करें।

रोते नहीं, हँसते हुए ही
पूर्ण यौवन दान दें,
प्रौढ़ता परिपूर्ण जीवन
त्याग का परिधान लें।

युग-युगों की याद करनी
सैकड़ों घटना हमें
राष्ट्र-मंज़िल देखनी है
अब नहीं बँटना हमें।

शत्रु-मुंडों से सिंहासन
उच्च था हमने किया,
काल गति ने घेर डाला
और हमने तज दिया।

आज वह टूटा सिंहासन
था सँजोया त्याग से,
गीत गाते बढ़ चलें हम
मातृ-भू अनुराग से।

♦♦

समय की चुनौती

स्वीकार कर लें यह चुनौती समय की
देखना मंज़िल तुम्हारे पग में होगी।

दूर है मंज़िल बढ़ते चलो
श्रम कर दिन–रात तुम एक कर दो,
तोड़ दो बाधक दीवारें राह की
राह को आज अटल श्रृंग कर दो,
सूर्य जैसी अग्नि पीता हौसला
प्रखर होगी सफलता की शक्ति होगी,
देखना मंज़िल तुम्हारे पग में होगी।

मार्ग में कहाँ आगे बढ़ सकेंगे
जिनके लक्ष्य निष्क्रिय फीके पड़े हैं,
वही मृत्यु पाते, डरें मृत्यु से जो
अमर तो वही जो अडिग पग खड़े हैं।
अडिग दृढ़ डगर पर अगर तुम बढ़े तो
अमरता तुम्हारी सफल शक्ति होगी
समय की चुनौती स्वीकार करो तुम।

परहित ही सबका, जो नित सोचते हैं
विपरीत आँधी वही रोकते हैं,
कहाँ शक्ति उनमें जो जूझे नहीं हैं
वे ही लिप्त होकर दुख भोगते हैं।
करो मार्ग प्रशस्त संघर्ष से तुम
ले राह तबकी छोड़ो लिप्त भोगी,
समय की चुनौती स्वीकार करो तुम।

♦ ♦

प्यारा हिंदुस्तान

अखिल विश्व में चमक उठे,
प्यारा हिंदुस्तान!
प्यारा हिंदुस्तान!
गरज उठा है श्वेत प्रहरी
उठा देश का कण-कण है,
भरतभूमि की रक्षा करने
आज खड़ा हर जन-मन है।
न्यौछावर करके तन को
करें राष्ट्र उत्थान!
करें राष्ट्र उत्थान!

झर-झर कर झरने भी गाते
उठो-जगो अब सुप्त न हो,
स्वयं स्वार्थ के गीतों में
हे हिंदू! तू लिप्त न हो।
जाग उठा है देशभक्त अब
गाता है प्यारा विहान!
प्यारा हिंदुस्तान।

पावन माटी का कण-कण
शांति-संदेश ले उड़ता है,
नदियों का कल-कल निनाद
उमड़-घुमड़कर जुड़ता है।
गुंजित हो जो विश्व गगन में
करें राष्ट्र का गान!
प्यारा हिंदुस्तान।

♦♦

बलिदानी पथ का वनफूल

चाहे मार्ग कंकरीला हो
चाहे चुभें हर अंग में शूल,
सज्जित होने मातृचरण में
मैं बनूँ भगवन्! वनफूल।

मैं उस राह उगूँ, हे भगवन्!
मातृभक्त जिस राह चलें,
शृंगार बनूँ उनके उर का
चाहें शोभित पाँव तले।

जिस पथ हज़ारों वीर चलें
मुझे चाहिए उस पथ की धूल,
उगूँ तो माँ के चरण चढ़ूँ
मुझको क्षार मिले या शूल।

खिलूँ तो केवल हर्षित करने
वीरों का बलिदानी पथ,
ख़ुश रहूँ माँ के चरणों में
स्वीकार नहीं इंद्रासन-रथ।

विनय हमेशा करता इतनी
नहीं इसे तुम जाना भूल,
मुझे बनाना सदा हे भगवन्!
बलिदानी पथ का वनफूल।

♦♦

भरतभूमि की धूल मिले

धन दौलत वैभव न मिले माँ! भरतभूमि की धूल मिले
धन से प्यार नहीं मिलता माँ, इन सबमें है शूल पले।

मुझे स्वर्ग भी नहीं है प्यारा
मुझे गोद माँ की प्यारी,
जिस गोदी में जन्म लिया
वही स्वर्ग सम है न्यारी।
जीवन-भर संघर्ष करें माँ! हार मिले या जीत मिले
धन दौलत-वैभव न मिले माँ! भरतभूमि की धूल मिले।

तेरा सुख-वैभव है अपना
तेरा दुख वेदना चरम,
चाहे जितनी विपदाएँ हों
तुझ पर मिटना धर्म परम।
आगे ही बढ़ते जाएँ माँ, दुनिया तो क्या ब्रह्म हिले,
धन दौलत-वैभव न मिले माँ! भरतभूमि की धूल मिले।

तुझको दुखी न देखें पल-भर
विनय ईश से करते हैं,
तुझ पर ही जीते हैं माता
तुझ पर ही हम मरते हैं।
अटल हिमालय हिल न सकेगा, चाहे जितने व्यवधान मिलें
धन दौलत-वैभव न मिले माँ! भरतभूमि की धूल मिले।

मन में तुम हर क्षण रहना
औ' छोड़ नहीं मुझको देना,
बच्चा भूल नहीं सकता माँ
चिर स्नेह तुमसे लेना।
बनें भले ही हम रजकण माँ, नहीं फूल जो स्वर्ग चढ़े
धन दौलत-वैभव न मिले माँ! भरत भूमि की धूल मिले।

♦♦

सुख की चाह नहीं

रह-रहकर अब चलने का, नहीं समय है रे वीरो!
दिखला दो दुनिया को पौरुष, पीछे नहीं हटो धीरो!

नहीं याद करता उसको जग, कुछ न करके दिखलाता
जीवन सारा व्यर्थ गुज़रता, कायर ही वह कहलाता।
आज समय ऐसा है जग में, पाप पुण्य से टकराया
सही दिशा में जाने वाला, है मानव भी घबराया।
श्रेष्ठ मार्ग को अपनाकर अब हीन भाव त्यागो वीरो!
रुक-रुककर अब चलने का, नहीं समय है रे वीरो!

देखो हिंसा पग-पग पर है, नहीं सँभल पाया मानव
ख़ुशियाँ ख़ूब मनाता है, आतंक मचाता है दानव।
वही व्यक्ति से वीर बना, जिसने इसका प्रतिकार किया
काँटों पर ही चलकर जिसने, जग भर पर अधिकार किया।
आज चुनें उस पथ को हम भी, हिम्मत करके रे धीरो!
रुक-रुककर अब चलने का, नहीं समय है रे वीरो!

सुख की चाह नहीं उनको, जो कष्टों में भी बढ़ते हैं
विपद घोर-घनघोर महा पर, लक्ष्य-शिखर पर चढ़ते हैं।
लक्ष्य दूर है उच्च शिखर का, मार्ग विकट में भी चलते
नहीं देखते बाधाओं को, क़दम-क़दम पर हैं बढ़ते।
हमें लाँघना है इन सबको, ध्येय मार्ग लेकर धीरो!
रुक-रुककर अब चलने का, नहीं समय है रे वीरो!

♦♦

छिपा पौरुष जानो

चाहता हूँ तुम बढ़ो
औ' सबको शक्ति दो,
धरा-धरा, गगन-गगन से
प्रेरणा प्रदीप्त लो।

हो धधकती ज्वाल पर
तुम कूद इसमें भाग लो,
कर कठिन परिश्रम को
बन सफल परिणाम दो।

जो छिपा पौरुष स्वयं में
तुम उसे भी जान लो,
दृढ़ता से यदि बढ़े तो
है सफलता मान लो।

♦♦

साधना

सदा दुखों के घेरे में, जिसने सुख को न जाना,
घोर अँधेरी रातों को भी, जिसने विकट न माना।

प्रकाश मिला न हृदय को तो
स्वयं जला प्रकाश बना,
ध्येय साधना के पथ को
जिसने सर्वोत्तम गिना।

जीवन बोझ से झुकते कंधे, जिसने व्यर्थ न माने
निज का दीपक नहीं जलाया, केवल निज को पाने।

आशा थी विश्वास भरा था
साहस ही तो जीवन था,
मृत्यु निराशा की सब घूँटें
पीकर जीवित जीवन था।

♦♦

नई किरण

फैला है अँधियारा जग में, मिलकर दूर भगाएँगे,
नई किरण हैं हम आशा की, नूतन दीप जलाएँगे।

घर–घर में अब दीपक होगा
जो जलना सिखलाएगा,
पग–पग फैले स्वार्थों को जो
तन–मन से ठुकराएगा।
स्वार्थों को ठुकराएँगे हम, गीत विजय के गाएँगे,
नयी किरण हैं हम आशा की, नूतन दीप जलाएँगे।

कल आँगन में जग नत होगा
उसके ही उजियारे हम,
त्याग, ज्ञान और देशप्रेम के
मूर्तरूप हों सारे हम।
जीवन की राहों में हम सब, सुंदर फूल खिलाएँगे,
नई किरण हैं हम आशा की, नूतन दीप जलाएँगे।

♦ ♦

मैं निशंक

जाति–पाँति को हटा
भेद–भाव को मिटा
हृदय–हृदय के तल पहुँच
विजय के गीत गा रहा
मैं निशंक बढ़ रहा।

मैं लक्ष्यहीन हूँ नहीं
पथ कंटकों पर जा रहा
निज लक्ष्य को पाने स्वयं
ठोकरें भी खा रहा।
जो भाग्य से मिला मुझे
स्वदेश–प्रेम पढ़ रहा,
मैं निशंक बढ़ रहा।

तूफ़ान गोद में बिठा
अंधकार को मिटा
सब बेड़ियों को तोड़कर
स्नेह-सूत्र जोड़कर
दिशा-दिशा में आज मैं
शिखा-शिखर पे चढ़ रहा
मैं निशंक बढ़ रहा।

कंटकों में मैं सहज
प्रशस्त मार्ग कर रहा
अंधकार को हटा
प्रकाश-पुंज भर रहा
हर क़दम पर आज मैं
मोतियों को कढ़ रहा
मैं निशंक बढ़ रहा।

♦♦

मुझे विधाता बनना है

मुझे विधाता बनना है
अंतस् में ज्योति जलानी है
निज में निज को निर्णय देकर
आज सफलता पानी है।

विश्वास जगाना है मुझको
अब गीत विजय के गाने हैं
पर्वत ऊँचे गगन चूमते।
मुझे धरा पर लाने हैं।

मिटते इन पगचिह्नों पर
आँख मूँद नहीं जाना है,
निज पौरुष को बना दीप
मुझको निज मार्ग सुझाना है।

♦♦

भारत की शान

आलस्य में क्यों पड़े नौजवान!

हे मातृ-पुत्रो, करो याद तुम
जो मिटे मातृभूमि पर रहा नाम गुम,
उठो तुम धरा पर कमर कसके ठान
आलस्य में क्यों पड़े नौजवान?

प्रातः उठो याद उनको करो
था नाद जिनका करो या मरो,
अब तुम भी मिलकर, करो इनका गान
आलस्य में क्यों पड़े नौजवान?

कहाँ रात सोये वे माँ के सपूत
न सोने दिया जो बने थे कपूत,
जलाओ अब ज्योति, मिटाओ अज्ञान
आलस्य में क्यों पड़े नौजवान?

स्वयं तो जगे थे, ये सबको जगाकर
बढ़े मार्ग में थे ये सबको हटाकर
बाधा है तोड़ो, खड़ी जो चट्टान
आलस्य में क्यों पड़े नौजवान?

गुनगुनाए इन्होंने, मिलके गीत सारे
आँधी मिटी साथ तूफ़ान हारे
प्रातः करो मातृभूमि का ही गान
आलस्य में क्यों पड़े नौजवान?

यही गीत सुनकर हृदय सबका जागा
उद्घोष सुनकर ही दुश्मन भी भागा
दीनता को भगाकर करो अब उत्थान
आलस्य में क्यों पड़े नौजवान?

दहकते हृदय की वह धड़कन सुनो
आवाज़ दो तुम नव रचना चुनो
उठो तुम जगो अब भारत की शान
आलस्य में क्यों पड़े नौजवान?

♦♦

सींच लो हृदय-कली

सींच लो हृदय-कली,
सींच लो हृदय-कली।

क्यों खड़े हो मूक यों ही, शीघ्र अंजलि जल भरो,
प्रेम, श्रद्धा, प्रेरणा से, तृप्त कण-कण को करो।
स्नेह से बढ़कर न कोई, स्नेह पाने ये चली,
सींच लो हृदय-कली, सींच लो हृदय-कली।

ये न सोचो ये कली है पूर्णता इसमें सभी,
वे उभर आए वहीं से, थे तो अंकुर वे कभी।
अब करो पूरित गुणों से, जो उभरने को चली,
सींच लो हृदय-कली, सींच लो हृदय-कली।

प्रेरणा की इस किरण से, तेज फैला दो सभी,
निस्तेज तो बस मृत्यु है, आदर्श न बनती कभी,
धैर्य से सिंचित करो अब, स्नेहजल में जो पली,
सींच लो हृदय-कली, सींच लो हृदय-कली।

♦♦

अंतिम इच्छा

हिम्मत करके आगे बढ़कर
हर पत्थर से टकराया
काँटों से भी छिद-छिद कर
मेरा यह प्रिय महकाया।

क़दम-क़दम पर ठोकर खाई
गिरा, किंतु फिर मुस्काया,
क़दम-क़दम पर शूल मिले पर
इससे पार यहीं पाया।

कुचला है पैरों से इसको
कीचड़ में इसको डाला,
स्वीकार किया पनपा ये वहीं
प्रकृति ने इसको पाला।

खूब जलाया इसको सबने
मिटा नहीं अंतिम तक खाक,
बढ़कर जलता सदा रहा ये
मिटा न उनकी कोशिश लाख।

सम्मान नहीं इससे पाया पर
बढ़े क़दम पीछे न हटे,
अंतिम इच्छा बनी रही
भारत माँ पर शीश कटे।

♦♦

जग में भारत देश

जग में भारत देश हमारा, है प्राणों से प्यारा।

यहाँ देश का शृंग हिमालय
कल-कल गंगा बहती,
चट्टानों तूफ़ानों में भी
आगे बढ़ती रहती।
आज हमें भी आगे बढ़ना, ख़ूब लगाएँ नारा।
जग में भारत देश हमारा, है प्राणों से प्यारा।

जहाँ सप्तपुरी ज्ञान कराती
सबके मन का औ' तम का,
यहीं सप्तसिंधु के जल से
भारत का कण-कण चमका।
सिंधु-सरीखा बनकर हमको, पर उपकार करना सारा।
जग में भारत देश हमारा, है प्राणों से प्यारा।

जहाँ राम है बच्चा-बच्चा
भरत-कृष्ण-अर्जुन सारे,
जीवन की सच्चाई से ही
सभी दुष्ट-दानव हारे।
इसी भूमि से प्यार करें हम, बहे राष्ट्रवादी धारा।
जग में भारत देश हमारा, है प्राणों से प्यारा।

♦♦

स्वयं जलकर

स्वयं जलकर दूसरों को रोशनी का दान दे,
मार्ग से भटके पथिक का, हाथ बढ़कर थाम ले।

तू दिखाकर हित सिखा दे, और प्रेरित राह दे,
छोड़कर सब स्वार्थ जग के, किंतु परहित चाह दे।

अब न कर तू देर क्षण भी, पिघलकर सुप्रकाश दे,
तू धरा पर फैल इतना, लौ तेरी आकाश ले।

नित्य जलकर भी तुझे, यदि मूर्ख कोई नोच ले,
चाहता जग है तुझे क्यों, ये भी निश्चित सोच ले।

दीप-तल चाहे अँधेरा, ज्योति दिशि-दिशि भेज दे,
अब हुए निस्तेज जग को, शीघ्र ही तू तेज दे।

पिघलकर, जलकर मनुज तू बाड़ ऊँची लाँघ दे,
बुझना नहीं, मत मंद होना, कुचल तू मदांध दे।

तिमिर कोनों में न रह पाए, तू इतना ध्यान दे,
तू बुझा अज्ञान को, अब नित्य निश्छल ज्ञान दे।

♦♦

शिक्षा

शिक्षा क्या वह भर न सकी जो
राष्ट्रभक्ति को जन-जन में,
स्वाभिमान जो बचा सका न
शक्ति नहीं उस तन-मन में।

आदर का यदि भाव नहीं तो
गूँगापन लिखना-पढ़ना,
टूट नेह का मन से बंधन
क्या जाने आगे बढ़ना।

भाव स्वजन का रहा नहीं तो
डस लेगा वह जन-जन को,
डरी रहेगी जनता उससे
खटकेगा वह हर मन को।

मूल बिंदु जीवन की निष्ठा
संस्कारित यदि अंश नहीं,
पतन राष्ट्र का होता है फिर
पैदा होते कंस वहीं।

है कठोर पाषाणहृदय वह
जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं,
मानव क्या पाषाण-खंड है
जिसमें जीवन सार नहीं।

♦♦

राष्ट्रदेव है सबका

यही राष्ट्र है देव सभी का, यही पूज्य है हम सबका,
प्राण भरा है, ज्ञान दिया है, सुप्त हुआ था जन कब का।

भव्य पुरुष बन राष्ट्र खड़ा है, ब्रह्म यही ब्रह्मांड यही,
षड्ऋतु जिसमें स्वर्गहार हैं, वेदमंत्र का प्राण वही।
वेद ऋचाएँ अखिल विश्व में, करती तम दूर हृदय का,
यही राष्ट्र है देव सभी का, यही पूज्य है हम सबका।

देव-कंठ में हार रूप हैं, भारत की अगणित नदियाँ,
चरण चूमता आया है जग, बीत गईं अगणित सदियाँ।
करे पुण्य-पावन प्राणी को, कण-कण भारत की रज का,
यही राष्ट्र है देव सभी का, यही पूज्य है हम सबका।

अतुल शक्तिधारी पुरु है यह, इसका कण-कण चंदन है,
करे अर्चना-वंदन इसका, पल-पल हर मानव-मन है।
नित्य करें पूजन-अर्चन सब, कर्तव्य यही है हर जन का,
यही राष्ट्र है देव सभी का यही पूज्य है हम सबका।

सिर पर ताज हिमालय जिसके, पाँव पखारे जल सागर,
मार्ग दिखाकर दुष्ट संहारे, जिसमें नित नटवर नागर।
कैसा था यह राष्ट्र व्यक्ति भी, वह युग था कैसा तब का,
यही राष्ट्र है देव सभी का, यही पूज्य है हम सबका।

देव यही जिसने हँसते ही, हमको शैशव प्यार दिया,
ध्यान हटाकर अंधकार से, जीवन का नव सार दिया।
यह अज्ञानी आज बना क्यों, दिव्य पुरुष था जो तब का,
यही राष्ट्र है देव सभी का, यही पूज्य है हम सबका।

तन-मन-धन कण-कण में भी नित, पूज्य देव का ध्यान धरें,
क्षणिक न भूलें राष्ट्रदेव को, शब्द-शब्द में गान करें।
लीन रहें सब भक्त ध्यान में, ध्यान रहे अब पल-पल का,
यही राष्ट्र है देव सभी का, यही पूज्य है हम सबका।

♦♦

भारत

शिखर गगन चूमें नित जिसके
नदियाँ अमृत-सिंचन करतीं,
अखिल विश्व में फैली छाया,
पावन ऐसी भारत धरती।

विंध्याचल कटिबंध है जिसका,
है मेरुगिरि इसका माथा,
युगों-युगों से जुड़ी हुई है,
पावन इसकी गौरव-गाथा।

कंठहार हैं गंगा-यमुना,
पावन कण-कण को करतीं,
सूर्य-चंद्र दो चक्षु सरीखे,
आँगन है जग की धरती।

कन्याकुमारी चरण हैं इसके,
हैं पठार-सी जंघाएँ,
सोना उगलें हरे खेत नित,
यहीं जन्म ऋषि-मुनि पाएँ।

लंका पुष्प चढ़ाए इसको,
मलय पवन पंखा करती,
झरने झर-झर गाते रहते,
पावन गंगा-सी धरती।

♦♦

जीवन-अर्पण

यह जीवन हो तुझको अर्पण माँ, तूने पाला बड़ा किया,
उस देव-तुल्य शैशवावस्था में, गोदी में तेरी दूध पिया।

धन्य समझता आज भाग्य को, देवभूमि में जन्म लिया,
वही भूमि है जिसने जग में, देवपुरुष को जन्म दिया।

माँ है हमारी पाल रही तू, जीवन-दान भी दे रही,
आज समर्पण सब है तुझको, जो लगता है तुझे सही।

प्यार सदा ही करती रहती, कभी न दुख को प्रकटकिया,
शैशव किशोर तरुणाई में भी, तूने हमसे कुछ न लिया।

गोद पकड़कर खेल खिलाकर, योग्य हमें तूने ही किया,
भरी अंजलि जल की तेरी, बूँद-बूँद हमने ही पिया।

बचपन भी मस्ती में गुज़रा, गोदी में तेरी खेले,
हमको तो प्रसन्न रक्खा पर, तूने कष्ट बहुत झेले।

पाल-पोषकर बड़ा किया है, हम सब सेवक हैं तेरे,
सेवा करने एक नहीं, शत-शत बालक तुझको घेरे।

तेरा अन्न पौष्टिक है माँ, जीवन-दान दिया तूने,
उठा जगाकर खड़ा किया था, पड़े हुए जन जो सूने।

माँ, मैं पूर्ण समर्पित होकर, जीवन अर्पण करता हूँ,
सब-कुछ न्यौछावर करने की, निज में प्रेरणा भरता हूँ।

♦♦

डरते नहीं

मृत्यु से भी जो कभी
डरते नहीं हैं,
विपत्ति से समझौता कभी
करते नहीं हैं।

सफलता तो चरण उनके
चूमती है,
रोशनी चारों दिशा में
घूमती है।
मृत्यु से भी जो कभी–
डरते नहीं हैं।

♦♦

राह उन्हें दिखलाएगा

जी–भर कोशिश की तुमने
हीरे को लाख छिपाने की।
निर्भय–उद्वेलित जलधारा में
सिकता–सेतु बनाने की।

तुम्हीं बताओ किसने देखा
लोहे से हीरा छिपता है।
क्या सरिता का बहता जल
पाषाण–खंड से रुकता है?

देखो हीरा स्वयं चमककर
जग को भी चमकाएगा।
अंधकार में भटके हैं जो
राह उन्हें दिखलाएगा।

♦♦

जागृति भरें

नहीं देर करना
सागर में तरना
जो सुप्त हैं उनमें
जागृति भरना।
निशा से दबे जो
सुनसान हैं अब,
उठा दो उन्हें तो
निजगान दूँ तब।
तोड़ो सन्नाटा
मधुर झंकार करना,
जो सुप्त हैं उनमें
जागृति भरना।
युवा हैं जो यौवन से
चंचल हैं मन से,
जागे हैं लेकिन
वे सोए हैं तन से।
हे शक्ति! आ तू
इन्हें दीप्त करना,
जो सुप्त है उनमें
जागृति भरना।

♦♦

पुरुषार्थ

तुम अकेले, मैं अकेला
सब अकेले हैं यहाँ,
जिनके पौरुष पास है
वे अकेले हैं कहाँ?

जब कभी ऐसा लगा
पुरुषार्थ मन से चल दिया,
उसी क्षण आकर अलौकिक
शक्ति ने संबल दिया।

बस यही विश्वास लेकर
मैं बढ़ा पथ में अकेला,
झेलता ही जा रहा हूँ
आज तक भी कष्ट झेला।

कर्म पर विश्वास करना,
सफलता है लक्ष्य मेरा,
अरे, ओ पुरुषार्थ!
केवल चाहता हूँ नेह तेरा।

♦♦

ज्योति दिल में

ज्योति बनकर लौ हृदय में
दर्द से पनपी यहाँ,
पीर प्राणों ने सिखाया
नेह भरना है कहाँ।
कभी तो यह दीप बनकर
ज्योति औरों में भरे,
कभी तो यह टीस बनकर
हृदय में हलचल करे।
डाह करती ये हृदय में
कभी बहती भावों में,
कभी सागर-सी मचलती
डगमगाती नावों में।
कभी तो यह प्यार बनकर
दिलों में विचरण करे,
कभी यह विकराल बनकर
अग्निकण बनकर झरे।
तूफ़ान या आँधी चले
पर निरंतर ही जले,
तम को हटा प्रकाश करती
नहीं दिखती यह भले।

♦♦

मैं प्रभात हूँ

मैं वह प्रभात हूँ
जिसने हृदय के उद्‍गारों को
भावों में बदला,
और
तूफ़ान से उजड़े खंडहरों को
गाँवों में बदला।

मैं वह प्रभात हूँ
जिसने
दर्द-भरा गीत तुम तक पहुँचाया,
और
रात-दिन जलते-जलते
एक ज्योति दी
जबकि आसमाँ पर
था अँधियारा छाया।

'मैं आया'
नवगीत लाया
हारे हुए के लिए
फिर जीत लाया।
मैं तुम्हारे साथ हूँ
मैं प्रातः हूँ।

♦♦

साथ लिए जा

दुर्गम और भीषण
सारी चट्टानें पार कर,
उसको भी तू साथ लिए जा
जो बैठा है हारकर।

क़दम–क़दम तू क़दम बढ़ा
संघर्ष कर जोखिम उठा,
फेंक निराशा को कोसों दूर
तू आशा के गाने गा।

और तभी तेरा यह
लक्ष्य तुझे मिल जाएगा,
तब घोर अँधेरा स्वत: मिटेगा
सदा रोशनी पाएगा।

♦♦

तू अकेला नहीं

पास तेरे लगा मेला
किसने कहा तू है अकेला?
किंतु तूने ज़िंदगी में
सदा ही संघर्ष झेला।
प्रात: तुझको ओसकण से
स्वर्णिमा देकर सजाती,
सूर्यकिरणें लालिमा
देने तुझे नित प्रात: आतीं।
सूर्य तुझको तेज देने
पास अपने ही बुलाता,
सुहाना मौसम तुझे
गोद में लेकर सुलाता।
सांध्य बेला की सुहानी
रात है लोरी सुनाती,
प्रभात की निश्छल हँसी भी
साथ तेरे गुनगुनाती।
प्रात: बेला, दिवस, संध्या
ये अनोखे सभी प्यारे,
फिर कहाँ तू है अकेला
साथ तेरे बहुत सारे।

बदलो-बदलो यह धारा

घर-घर घूमे हरकारा
बदलो-बदलो यह धारा।

रूठा-रूठा कैसा मौसम
रूखा-रूखा सब जीवन,
बाहर गोरे-गोरे हैं पर
अंदर काले-काले मन।
व्यर्थ दिखावा करते हैं ये
व्यर्थ प्रगति का है नारा,
घर-घर घूमे हरकारा
बदलो-बदलो यह धारा।

हाय, बता ये कैसा जीवन
केवल खाकर सोना है,
कट जाए कैसे भी जीवन
और न कुछ भी होना है।
इसी सोच ने गर्त धकेला
इससे ही मानव हारा
घर-घर घूमे हरकारा
बदलो-बदलो यह धारा।

नीरस-नीरस सारा जीवन
स्वार्थों पर ही छाने का,
पहले खाते थे जीने को
अब जीवन है खाने का।
कैसा जीवन, कैसी उन्नति
ढोंग दिखावा है सारा,
घर-घर घूमे हरकारा
बदलो-बदलो यह धारा।

अब ललकारा मैंने तुमको
मैं ऐसा नहीं होने दूँगा,
केवल पशु-सम रहते-सहते
मैं तुम्हें नहीं जीने दूँगा।
सृजन मंत्र को साथ लिए
बदलूँगा जीवन सारा,
घर-घर घूमे हरकारा
बदलो-बदलो यह धारा।

अब अंकुर 'ऋजुपर्ण' 'समर्पण'
हरियाली फैलाएगा,
और 'विधाता' घर-घर जाकर
गीत प्रगति के गाएगा।
अब एक नया संसार दिखेगा
जो होगा प्यारा-प्यारा,
घर-घर घूमे हरकारा
बदलो-बदलो यह धारा।

♦♦

तरुणों से

तरुणो उठो, सुनो अरे!
शंख गूँजता आ रहा है,
देश के दुख दूर करने
यह जगाता आ रहा है।

रक्त में नव चेतना भर
यह चुनौती दे रहा है
नव प्रेरणा संचार कर
यह नियम सुध ले रहा है।

दुख-निराशा को हटाकर
शांति-सुख भी ला रहा है,
वैभव चिरंतन शांति बन
लो देख लो, वह आ रहा है।

तरुणो उठो, आगे बढ़ो
रक्त ऊर्जस्वित करो,
प्रेरणा के इन क्षणों में
गुंजार मन में तुम भरो।

♦♦

कविता-गंगा

तुमने लाख कोशिश की
मेरी कविता को बाँधने की,
इसे सज़ा दी तुमने
भारी चट्टानें लाँघने की।

तुमने
पग-पग इसे रोका है,
कोशिश करके,
इसे अग्नि में झोंका है।

फिर भी,
मेरी कविता की गंगा
दुर्गम, बीहड़ रास्तों में,
हिमालय की गोद से
निकल ही पड़ी है
सागर तक पहुँचने के लिए नहीं
अपितु
अनगिन प्राणियों को
जीवन देने के लिए
चट्टानों से टकराती हुई
कल-कल, छल-छल निनाद कर
हर जगह, हर मोड़ पर
संकल्प लिए खड़ी है,

मेरी कविता की गंगा
निकल ही पड़ी है।

कौन नहीं जानता
कि यह
शंकर की जटाओं में
उलझकर ही नहीं रही है,
यह तो अहर्निश, हर पल
जीवन–दान देने बही है।

स्वार्थों के दलदल में फँसा
यह जहान
इसे क्या रोक पाएगा?
क्योंकि
यह बाधाओं में भी भगीरथ बन
आगे बढ़ते रहने का
संदेश लेकर ही बढ़ी है,
मेरी कविता की गंगा
अब निकल ही पड़ी है।

♦♦

ज्योति बन

तिल–तिल जला स्वयमेव को
हम रोशनी पल–पल करेंगे,
औ' क्षितिज के घोर तम में
ज्योति बन हम तम हरेंगे।

संकटों के व्यूह को हम
तोड़कर ही चैन लेंगे,
विजय की लेकर पताका
देश को सर्वस्व देंगे।

अतीत का गौरव लिए
इतिहास का सर्जन करेंगे,
राष्ट्र के हित ही जिए हैं
राष्ट्र के हित ही मरेंगे।

♦♦

भारत सपूतो!

मातृभूमि की इस वेदी पर
अर्पित हुई जवानी
लिखी हृदय में कोटिजनों के
जिनकी अमर कहानी।

ज़ंजीरों में जकड़ी माँ को
आँख खोल जब देखा,
तनिक देर भी हुई नहीं
बदली थी मस्तक-रेखा।

देखा विपदा में माँ को जब
त्याग समर्पण जागा,
बलिदानी हर पूत धरा का
उमड़-घुमड़ने लागा।

ललक-ललक फिर कहे, कौन है
पीड़ित माँ को करता,
ख़ैर नहीं उस देशद्रोही की
धधक-धधक युग कहता।

उठे वीर जब भारत-भू के
देशप्रेम को दिया पुकार,
भारत-भू की रक्षा करने
मिटे क्रांति में पूत हज़ार।

मंत्र एक था इन वीरों का
मुक्त देश को करना
और राष्ट्रघाती तत्त्वों का
शीश हमेशा हरना।

इसी ध्येय को पूरा करने
मिल प्रयास सबने ही किया
बलिदानी भारत माटी यह
हमने जिसमें जन्म लिया।

बैठ रात्रि को हुए इकट्ठा
कौन वीर, बलिदानी कौन,
भारत माँ के पूत साहसी
बलि-वेदी पर चढ़ते मौन?

भूख नहीं अब प्यास कहाँ है
नहीं श्वास लेनी तब तक,
तोड़ेंगे माता के बंधन
शीष चढ़ाएँगे तब तक।

मरे किंतु मरके भी बढ़ते
हार क्षणिक नहीं मानी,
शीश कटाकर भारत भू हित
चला सैन्यदल बलिदानी।

बाधाओं में जीकर भी
तो कभी न हिम्मत हारी,
छिलीं पेशियाँ, मांस उधेड़ा
स्वतंत्रता फिर तारी।

जूझे वे सब जेलों में थे
नहीं गुलामी मानी,
छोड़ दिए थे वैभव-सपने
दाँव लगी मर्दानी।

मुक्त किया था माँ को सबने
फिर शृंगार किया था,
मार भगाया था परदेशी
जी-भर प्यार किया था।

हृदयंगम कर राष्ट्रभक्ति को
भारत सौंपा हमको,
स्वीकारो हे वीर सपूतो
श्रद्धा अर्पित तुमको।

♦♦

मुरझाएँ न

काँटों में रहकर भी जो
कोमलता नहीं तजते हैं,
पाँव तले हों या सिर शोभित
सभी जगह वे सजते हैं।

मैंने देखा उन फूलों को
जो न कभी मुरझाते हैं,
नित काँटों में लटके रहते
फिर भी वे मुस्काते हैं।

सुन लो यदि वे मुरझा जाएँ
विकसित यौवन के पल में,
कोई मूल्य न होगा उनका
इस सारे जग नभ-थल में।

♦♦

ख़ुद सँभलना

कौन है जिससे कहूँ मैं
व्यथा अपने इस हृदय की,
बात वह मन में उठी
अनुगूँज नीले इस निलय की।
कौन होगा पास आकर
जो सतत प्रेरित करेगा,
कौन है दृढ़ भाव से जो
रोक अनहित, हित करेगा।
कौन होगा देखना है
जो नए नित गीत देगा,
कौन है जो व्यथित मन को
आज निश्छल प्रीति देगा।
कौन निश्छल प्रीति देगा
कौन प्रेरित अब करेगा?
अब तुझे ख़ुद ही सँभलकर
मार्ग में बढ़ना पड़ेगा।

♦♦

साँस एक फिर भरनी

मौन पड़ी गंभीर नहीं है
धार छलकती तरनी है,
निर्जीवी मानव-जीवन में
साँस एक फिर भरनी है।

नफ़रत की दीवार खड़ी जो
जड़ से उसे मिटाना है,
पल्लव-पोषित नवल प्यार में
अंकुर एक उगाना है।
व्याकुल हैं जो आघातों से
उनमें साँसें भरनी हैं
मौन पड़ी गंभीर नहीं है
धार छलकती तरनी है।

आज निराशा में डूबा जो
उसने जीवन खोया है,
समय-लहर की उथल-पुथल में
वह जीवन नित रोया है।
पार अभी करना है उसको
नदियाँ अगणित तरनी हैं,
मौन पड़ी गंभीर नहीं है
धार छलकती तरनी है।

♦♦

महाप्रलय

जग में, विष का प्याला भरकर
मैंने खूब पिया है,
दंशन करते सर्पों को भी
मैंने प्यार किया है।

मन ही क्या पाषाणों को भी
स्वयं पिघलते देखा है,
सघन वनों की भीषणता को
सहज बदलते देखा है।

घोर अँधेरी रातों में भी
चाँद चमकते देखा है,
काग़ज़ के फूलों को मैंने
ख़ूब महकते देखा है।

सुख के, दुख के आँसू देखे
जन-जन निर्भय देखा है,
क्षण में बनता और बिगड़ता
महाप्रलय भी देखा है।

♦♦

जीवन यूँ न चला जाए

मन में यही है चिंता
पौरुष न व्यर्थ जाए,
इन आँधियों में जलता
दीपक न बुझने पाए।

आए न रात, दिन में
है मुझको ध्यान रखना,
रोशन हो देश अपना
तो पूर्ण होगा सपना।

सोया था रात में जब
चिंता यही रही है,
'सोया तो सभी खोया'
यह बात ही सही है।

दुनिया के रंग सारे
मानव-हृदय में छाएँ,
कोमल कली न झुलसे
जीवन न व्यर्थ जाए।

♦♦

इंसान कहलाएँ

जो हैं पिछड़े, और दुखी हैं
हम उनको भी साथ लें
जो हैं गिरते, सँभल न सकते
पकड़ उनका हाथ लें।

यह जीवन का अटल नियम है
सुख–दुख दोनों आते हैं।
विपदाओं से धैर्य न खोएँ
मर्द वही कहलाते हैं।

ठोकरें पग–पग लगी हैं
साथ मिलकर अब चलें,
सजगता बरतें सभी जन
जाने कब अंधड़ मिलें।

♦♦

यौवन

फूलों जैसे रहें प्रफुल्लित
गंध दूर तक दे जाएँ,
जन–जन को हर्षित कर जाएँ
ऐसे शुभ गुण सब पाएँ।
चाह नहीं है खिल जाने की
क्यों न कली ही चढ़ जाएँ,
आज चाहिए जो वसुधा को
ऐसे सद्‌गुण हम पाएँ।
जीवन सुखमय तब ही है
जब हर्षित मानव हो जाएँ,
पुष्प वही है यौवन–पल्लव
स्वार्थ तजें, कंटक पाएँ।

♦♦

काश, पूर्ण तुम होते

कहना तो है क़द से ऊँचा
स्वयं हैं गहरे पानी में,
मधुर दिखावा करते हैं
पर ज़हर उगलते वाणी में।

वे उपदेश न कम होते
जो घंटों तक चल जाते हैं,
स्वयं पता तुमको भी है
जो सुनते भटकन पाते हैं।

कर्तव्य नहीं अधिकार तो है
जो चाहें कर सकते हैं,
हित–अनहित मतलब ही क्या
ज़हर गले भर सकते हैं।

कथनी–करनी एक ही होती
काश, पूर्ण तुम होते तो,
सभी प्रेरणा लेते तुमसे
हृदय हज़ारों क्यों रोते?

♦♦

बिखराव

मोती के दाने बिखरे पड़े हैं,
दबाने को दुश्मन तत्पर खड़े हैं।

नहीं मान होता अलग दाने का,
अनुभव भी करता बिखर जाने का।
सदा जो रहे सामूहिकता से हट के,
बिखराव के वे अँधेरे में भटके।
बिखरे थे जो तब वे बिखरे पड़े हैं,
दबाने को दुश्मन तत्पर खड़े हैं।

टूटे पड़े सब, इकट्ठा करें हम,
मिलकर शिथिलता में साहस भरें हम।
देखो नहीं आज भयभीत तम को,
उजाला दिखाओ तुम्हीं, शीघ्र चमको।
ये कौन कोने में सोये पड़े हैं?
दबाने को दुश्मन तत्पर खड़े हैं।

अभिन्न अंग जिसके ये मोती बने हैं,
बिखरे पड़े वे कहाँ अब घने हैं।
करें अब निकटता इन्हीं दूरियों में,
सभी को पिरोएँ इसी सूत्रता में।
मुँह जो फिराकर परस्पर लड़े हैं,
दबाने को दुश्मन तत्पर खड़े हैं।

पिरोते रहे हैं पिरोएँ इन्हें हम,
ढूँढें, सँभालें, बढ़ाएँ इन्हें हम।
यही हार बनकर सँजोएगी सपना,
न हो विच्छिन्न भारत देश अपना।
कहाँ बच सके वे जो कोने पड़े हैं,
दबाने को दुश्मन तत्पर खड़े हैं।

रखें ध्यान इतना रहें संगठित हम,
एकात्म-अपनत्व-भ्रातृत्व हो सम।
रहो एक बनकर, करो काम मिलकर,
न बिखरो, न टूटो आँधी से हिलकर।
जल्दी चुनें जो बिखरे पड़े हैं,
दबाने को दुश्मन तत्पर खड़े हैं।

♦♦

देशभक्ति न सिसके

मानव तेरी देशभक्ति, कहीं सिसक न जाए।
कहीं राष्ट्र का नैतिक बल, क्षीण न होने पाए।

जिस माटी में जन्म लिया
हृष्ट-पुष्ट अमृत जीवन,
माता है यह, किया इसी से
इसने अपना विकसित यौवन।
शक्तियुक्त इस यौवन में, उन्माद कभी न आए,
मानव तेरी देशभक्ति, कहीं सिसक न जाए।

जिसका कण-कण बलिदानी
इतिहास बना सीमा पत्थर,
ग़ैरों का संताप मिटाकर
नारायण बन जाता नर।
मातृभक्ति की निष्ठा पर, आँच न आने पाए,
मानव तेरी देशभक्ति, कहीं सिसक न जाए।

♦♦

काँटों में जीते हैं

दुखी दिलों का हम हार बनते,
फूल बनकर हम शृंगार करते।
स्वयं नेह बनकर हम प्यार भरते,
उपकारी बन हम परोपकार करते।

हम जूझने में प्रसन्न रहते,
संघर्ष करना हम ही सिखाते।
कंटकों में फूल बनकर
खिलखिलाकर खिलना सिखाते।

सुगंध बनकर, हम मन समाते,
चाहे भले हम दुख–दर्द पाते।
बैठें नहीं हम आँसू बहाते,
देखा सभी ने हमें गीत गाते।

हम तो खुशी से होते समर्पित,
धन्य स्वयं को हम मानते हैं।
कोंपल, कली हों या पुष्प विकसित,
स्वागतम् करना ही हम जानते हैं।

♦♦

मैं मधुवन-दर्शन

मैं मधुवन हूँ अंतरतम का
मैं दर्शन हूँ नंदन वन का।

सौरभ सबको दे जाता हूँ
मैं मधु गीत सुनाता हूँ,
अपनी अनुपम छटा बाँटता
मैं बसंत बन आता हूँ।
तिमिर मिटाने सतत जला जो
दीप बना वह मैं जन–मन का
मैं चंदन हूँ नंदन वन का।

हरित विटप की नव कोंपल में
बैठ कूकता कोकिल–सा,
आमंत्रण देता मधु ऋतु को
मैं पिकदूत बना फिरता हूँ,
अपने मन:सरोवर में मैं
हंस बना रहता तिरता हूँ।
मैं कवि हूँ अपने मन का
मैं दर्शन हूँ नंदन वन का।

मैं प्रगति गीत का प्रथम छंद
हूँ कालचक्र गतिमान सतत्
शीतल नन्ही जल बूँदों का
मैं सतरंगी हूँ आभूषण।
सूना-सा लगता था हरपल
मैं दीप बना उस आँगन का,
मैं दर्शन हूँ नंदन वन का।

♦♦

काँटों की गोदी में

काँटों की शैया में जिसने
कोमलता को छोड़ा ना,
चुभन पल-पल होने पर भी
साहस जिसने तोड़ा ना।

जो विकसित संघर्ष में होता
काँटों से लोरी सुनता,
धैर्य सदा ही मन में रखता
नहीं विपदा से वह डरता।

पास आ मुझे कहता वो
जीवन में हर कष्ट सहो,
संकट की इन घड़ियों में
आगे बढ़ते सदा रहो।

♦♦

जलकण बनें

आज जलकण ही बनें हम, दें सभी को प्राण-दान,
एक क्षण भी न रुकें हम, तब बढ़े माता की शान।

जानते हैं एक जलकण के बिना जीते नहीं हैं,
कौन कह सकता है भू में, हम तो जल पीते नहीं हैं।
मान लें इसको ही जीवन, आज लें इससे ही ज्ञान
आज जलकण ही बनें हम, दें सभी को प्राण-दान।

क्या कभी विश्राम करने, एक क्षण भी ये रुकी,
सोच में नदियाँ पड़ीं कब, मैं दुखी हूँ या सुखी।
भावना परहित लिए, तुम भी बढ़ो सीने को तान,
आज जलकण ही बनें हम, दें सभी को प्राण-दान।

हर क़दम पर पत्थरों से, चोट ये लेती रही,
जूझकर चट्टान से ये, शक्ति को देती रही।
शक्ति पाकर हम बढ़ें, अर्पित करें जन-जन को ज्ञान
आज जलकण ही बनें हम, दें सभी को प्राण-दान।

भाव निश्छल है इसी में, जाति-मत इसमें कहाँ,
ग्रहण कर लेता है प्राणी, चाहना जिसको जहाँ।
ऊँच-नीच, जाति-मतों की, तोड़ दो कलुषित चटान
आज जलकण ही बनें हम, दें सभी को प्राण-दान।

बाँध बनकर भी रुकी क्या, है कभी किसने सुना,
हित जहाँ तक प्राणियों का, मार्ग इसने वह चुना।
ले इसी से प्रेरणा सत् औ' करें इसका ही गान,
आज जलकण ही बनें हम, दें सभी को प्राण-दान।

♦♦

गिरे हुए लोग

ये कितने गिरे हुए लोग हैं
जिन्होंने अपने स्वार्थों के लिए
वहाँ आग लगाई है
जहाँ जीवन मिलता है
जीने के लिए।
वहाँ भी ज़हर घोला इन्होंने
जहाँ पानी की जगह
अमृत मिलता है
पीने के लिए।

♦ ♦

उभरती चेतना

शक्ति हो जब सुप्त सारी
स्वजन का दल-बल बढ़ा हो,
रक्त से लथपथ बना वह
क्रोध सीने में चढ़ा हो।
वीरता कायर बनी हो
श्रेष्ठता भी लुप्त सारी,
निज पराए बन गए हों
चलती रहे खट-पट करारी।
न्याय आँखें मूँदकर हो
और गूँगा सत्यवादी,
राष्ट्र बन हो आत्मविस्मृत
हो मलिन जब वेश खादी।
तब उभरती चेतना जो
अति विकट संघर्ष करती,
तोड़ती अन्याय को जो
उत्कर्ष में है हर्ष भरती।

♦ ♦

देश को आओ बचाएँ

डगमगाती आज मंज़िल
जल रही अगणित कड़ी,
ख़ून के आँसू बहाती
मूक भारत माँ खड़ी।
स्वार्थ के दलदल फँसे जो
और फँसते जा रहे हैं,
हाथ पर ही हाथ रखकर
और हँसते जा रहे हैं।
टीस क्यों नहीं है हृदय में
नींव पत्थर गिर रहे हैं,
देश के रक्षक सभी ये
दानवों से घिर रहे हैं।
आज उठ पत्थर लगाओ
भयभीत हो न आग से,
देश को आओ बचाएँ
रक्त-रंजित दाग़ से।

♦♦

जीवन का सार

जो जन-जन को हर्षा न सके
वह प्रेम मधुरस धार नहीं,
वह शब्द नहीं, कटु तीर सदृश
जिसमें जीवन का सार नहीं।

वे चक्षु कहाँ हैं मानव के
जिनमें समाज का मर्म नहीं,
क्या भाव समाएगा उसमें
जिसने देखा दुख-दर्द नहीं।

वह पौरुषहीन पुरुषत्व सदा
जो सद्गुण बनकर महके ना,
तरुणाई बिन वह तरुण है जो
अन्याय देखकर दहके ना।

उन्नत मस्तक कहते न उसे
जो तुच्छ स्वार्थ में झुक जाता,
औ' दृष्टिहीन वह मानव है
जो बाधाओं में रुक जाता।

वे पाँव नहीं जो दुर्गम पथ में,
बढ़ें न आगे हैं जाते,
वे मनुज नहीं कहलाते हैं
जो स्वार्थ छोड़ न दिखलाते।

वह चिंतनशून्य विखंडित है
है ध्येय नहीं जिस जीवन में,
वे जन को क्या पहिचानेंगे
है दया नहीं जिनके मन में।

है हृदय नहीं उस मानव में
जो प्राणी को पीड़ित करता,
वह घृणित पात्र बन जाता है
घुट-घुट करके पल-पल मरता।

अंतर मानव औ' पशु में है
मानव विवेक से करता काम,
धर्म-कर्म की सब बातें वह
सँभल-सँभल कर लेता थाम।

संयम ज्ञान विवेक न हो
कोरा पशु ही है वह मानव,
शुभ गुण से बनता देव वही
दुर्गुण से बनता है दानव।

अब सोच-समझ अंतिम निर्णय
मानव तुमको लेना होगा,
अति उच्च गुणों का संचय कर
फिर जन-जन को देना होगा।

♦♦

हिम के शिखर से बहता

हिम के शिखर से बहता
यह आ रहा है कहता।

उसको क्यों भूल बैठे?
करते थे नाज़ जिस पर,
अब मूक देखते क्यों?
लपटें हैं आज इस पर।

ये जल रही धरा है
हर महल तक भी ढहता
हिम के शिखर से बहता
यह आ रहा है कहता।

तुम भूलना न यह क्षण
इससे विमुख न होना,
दुश्मन के हाथ देकर
इसकी न लाज खोना।

वह पूत है धरा का
जो मृत्यु तक भी सहता,
हिम के शिखर से बहता
यह आ रहा है कहता।

♦♦

आह, बंधन तोड़ डाले

तुमने कहा बंधन है सारा,
बिना अपराध के है ये कारा।
चलना कठिन होगा तुम्हारा,
मान लो कहना हमारा।
पाँव में बेड़ी सजेगी
हाथ में हथकड़ी होगी,
उन्मुक्तता भी आज तेरी
छटपटाती क़ैद होगी।
बढ़ चला था तीव्रता से
बंधनों से पड़े पाले,
आह, मैंने सभी बंधन
एक क्षण में तोड़ डाले।
मुड़ते हुए सीधे किए
टूटे हुए सब जोड़ डाले,
आह, मैंने सभी बंधन
एक क्षण में तोड़ डाले।

♦♦

भारत भू

स्वर्गभूमि से ऊँचा माथा,
रहती हैं षड्ऋतु जिसमें,
वही देश है मेरा भारत,
हैं गंगा-यमुना जिसमें।

चारों वेद इसी धरती पर,
ज्ञान विश्व-भर को देते,
गीता के तत्त्वों से जन-जन,
ज्ञान कर्म का भर लेते।

पहरा देता स्वयं हिमालय,
दक्षिण में सागर जिसके,
उत्तर में तो सोमनाथ है,
ब्रह्मपुत्र पूरब इसके।

♦♦

हम एक हैं

ईश्वर की प्रिय देन है भारत
वेद कहे हैं स्वर्ग समान,
सुंदरता क्या कहनी इसकी
इस पर आते देव महान।
कहीं शीत है, गर्मी, वर्षा
कहीं हिमालय हिम का पात,
गढ़वाली-बंगाली ही क्या
बहुभाषाएँ अरु बहु जात।
गुजराती है, उड़िया भी है
कहीं तमिल, कहीं मद्रासी,
ये पंजाबी-कश्मीरी हैं
पर सब हैं भारतवासी।
खान-पान तो अलग-अलग है
भिन्न वेश-भूषा है यहाँ,
रहन-सहन तो अलग-अलग पर
भारत बोले एक यहाँ।

♦♦

डगमगाते मत समझना

चूर हैं थककर भले ही
किंतु फिर भी बढ़ रहे पग,
गिर कभी घुटनों के बल
फिर भी मंज़िल चढ़ रहे पग।
डगमगाते मत समझना
दुर्बल क्षणिक बनते नहीं हैं,
जो बढ़े दृढ़ भावना से
सीढ़ियाँ गिनते नहीं हैं।
आराम से मतलब नहीं
पथ में बढ़े दिन-रात आगे,
बाँध सकते हैं नहीं अब
गूँथे हुए अनगिनत धागे।
लक्ष्य-शिखरों पर चढ़ेंगे
कब ख़ुशी की चाह उनको,
फूल या काँटे मिलें बस
है नहीं परवाह उनको।

♦♦

राग-द्वेष तम कारा है

सतत बहे जीवन-धारा,
कोई न भटके बेचारा।
हरक्षण, हरपल सोचा करता
सत्पथ से मैं दूर न जाऊँ
बहुत घना अँधियारा जग में
निज पथ से मैं भटक न जाऊँ।
जीवन के अँधियारों में
सतत बहे जीवन-धारा,
कोई न भटके बेचारा।

काले बादल मँडराए हैं
राग-द्वेष दिखता सारा,
तम की इस प्रस्तर-कारा में
निश्छल जन दिखता है हारा।
स्नेहबिंदु सब सूख गए हैं
सागर का जल है खारा
सतत बहे जीवन-धारा,
कोई न भटके बेचारा।

ईश, विनय तुमसे है मेरी
सत्पथ सदा दिखाना तुम,
राग-द्वेष-तम की कारा को
मन से सदा हटाना तुम।
मन सबके ही अकलुषित हों
चमके जीवन-ध्रुवतारा,
सतत बहे जीवन-धारा
कोई न भटके बेचारा।

♦♦

दीपक जलने दो

इस मंदिर के दीपक को
विनती तुमसे जलने दो।
इस मंदिर को खंडहर करने
डाला क्यों तुमने घेरा?
ज्ञान न था इतना भी तुमको
यही तो सब-कुछ था मेरा।
इस मंदिर में तूफ़ान चलें तो
सहज उन्हें भी चलने दो,
इस मंदिर के दीपक को
विनती तुमसे जलने दो।

इस मंदिर की उस ड्योढ़ी में
निज गीतों को सुनता हूँ,
इसकी छाया में बैठे ही
निज जीवन-पथ चुनता हूँ।
गीत सुहाने सारे, इनको
अरुणोदय तक चलने दो,
इस मंदिर के दीपक को

विनती तुमसे जलने दो।

यह मंदिर इसके आँगन में
नित पूजन मैं करता हूँ,
इस मंदिर में निज श्वासों को
पावनता से भरता हूँ।
कुछ दिन तो प्रभु इन श्वासों को
मन-मंदिर में भरने दो,
इस मंदिर के दीपक को
विनती तुमसे जलने दो।

अंधड़ भारी, रात अँधेरी
मुझ दीपक को जलना है,
मंदिर की छाया में बैठे
नया गीत ही रचना है।
ढलते हैं यदि आज प्राण तो
इन प्राणों को ढलने दो,
इस मंदिर के दीपक को
विनती तुमसे जलने दो।

♦♦

जीवन-वीणा

ये वीणा है एक जीवन, हैं अनेकों तार जिसमें,
सब गुणों से पूर्ण है यह, निहित अमृत-धार इसमें।

है पड़ी यह सुप्त वीणा, तार नव झंकार छू लो,
नाद अमृत से सना है, क्षण नहीं तुम एक भूलो।

हाथ पड़ता तार पर जब, वह मधुर झंकार देता,
तीव्र गति जाते पथिक को, शीघ्र ही यह रोक लेता।

चाहता है जो अमरता, पान इस रस का ही करता,
पी सभी विष-घूँट लेता, मृत्यु से किंचित न डरता।

खोजते क्यों बिंदुरस को, है स्वयं में ढेर सारा,
थाम लो वीणा मनोहर, तार ने तुमको पुकारा।

हाथ से छूकर सजाओ, यह मधुर झंकार प्यारी,
मुग्ध कर लो जीव, जन को, और धरती को ही सारी।

तुम्हीं वीणा, तुम्हीं वादक, बद्ध लय के साथ गाओ,
गूँजता मधु गीत अपना, शीघ्र तुम जग को सुनाओ।

♦ ♦

ज़िंदगी-ज़हर

लक्ष्यहित जीवन सुपथ पर
मोड़ पग-पग ही मिले,
कंटकों में बढ़े आगे
पुष्प काँटों में खिले।

हलचलों का ज़हर जीवन
विवशता सबको मिली,
ठोकरों, काँटों ने मिलकर
देह कोमल ही छली।

किंतु जो बेहोश गिरते
लक्ष्य उनको कब मिला?
कल भटकते कोटिजन के
पुष्प जीवन में खिला।

ज़हर भी है ज़िंदगी तो
ले गटकता जा उसे,
कंठ ही तो नील होगा
इसकी चिंता है किसे?

♦ ♦

विजय के गीत गाऊँ

मुक्त हो मैं गीत गाऊँ,
पास मैं ग़म के न आऊँ।
आत्मगौरव से लबालब,
मैं विजय के गीत गाऊँ।
लक्ष्य हित तोड़े हैं बंधन, दूर कर दूँ आज भय को,
आत्मा अक्षय सदा से, मैं चला अब मृत्यु जय को।

आपदा की ये घटाएँ,
क्षितिज पर मँडरा रही हैं,
प्रलय की पागल बलाएँ,
भू–जगत थर्रा रही हैं।
रोककर ये सब घटाएँ, मोड़ दूँगा मैं प्रलय को,
बढ़ चलूँगा हर दिशा में, छोड़ दूँगा मृत्यु–भय को।

घोर तम आगे खड़ा जो,
मार्ग रोके व्यर्थ ही है,
कर्म में आलस्य आना
आपदा का अर्थ ही है।
सूर्य जैसी ज्योति बन मैं, चीर दूँगा घोर तम को,
मुक्त हो मैं गीत गाऊँ, मेट दूँगा आज ग़म को।

♦♦

मैं स्वयं ही

मैं स्वयं अब किरण बनकर
निशा को भी प्रभा दूँगा,
मैं स्वयं हवि–द्रव्य बनकर
स्वार्थ अपना जला लूँगा।

मैं स्वयं ही पुष्प बनकर
चमन को भी सजा दूँगा,
मैं स्वयं त्रिशूल बनकर
शत्रु को भी मिटा दूँगा।

मैं स्वयं नवराह बन
नव चेतना संचित करूँगा,
स्वयं बन इतिहास नूतन
सत्य का शोधन करूँगा।
मैं स्वयं अब किरण बनकर,
निशा को भी प्रभा दूँगा।

♦♦

शांत हूँ पर

कौन आ मेरी धरा पर
आज मुझको है मिटाता,
राष्ट्र के मणिमय मुकुट में
कौन आ निज को बिठाता?

कौन आ बंधुत्व में
देकर दरारें चल दिया है,
चिनगियों को फेंक मन में
आज मुझसे छल किया है।

शांत हूँ पर सोच लो
प्रचंड बन जाता हूँ क्षण में।
दुष्टता भू से मिटाने
काल बन आता हूँ रण में।

♦♦

प्रिय गढ़वाल

सुंदर अद्‌भुत अवनि अलंकृत,
जिसको श्वेत छटा भी अर्पित।
चाँद-सितारों जैसा स्थल,
भारत वसुधा का अंतस्तल।

सरिताओं की कल-कल छल-छल,
मन को करती हर्षित प्रतिपल।
मूक नहीं तुम बनो मुखर,
कहता निर्झर का मधु स्वर।

देखो कैसा मनभावन है,
पर्वत अंचल यह पावन है।
हरा-भरा ये प्रिय गढ़वाल,
ज्योति रश्मि का विस्तृत जाल।

सीढ़ीनुमा खेत, अति सुंदर
पर्वतश्रेणी की माला।
झूम-झूम उठता मेरा मन
जब गाती पर्वतबाला।

♦♦

अहंकार मिटा

अहंकार मिटा, यह मिथ्या है,
संकीर्ण वृत्ति को पास न ला,
मन की सब सीमाएँ तोड़
अनंतता को निज से जोड़।

विपदा में यदि तनिक न डोला,
मिट जाएगा ग़म का चोला,
प्राणों को हाथों में रखकर,
ग़म को पास न आने दो,
एकीभूत करो आत्मा को
बाक़ी सब मिट जाने दो।

♦♦

राष्ट्रमाता

नमन करता तव चरण में
धन्य होऊँ राष्ट्रमाता
आ गया यदि तव चरण में।

सिंधु-सी गंभीर माँ तुम
गगन-सी विस्तार वाली,
विश्वबल पूजित धरा में
कीर्ति-शिखरों की शिवाली।
एक मोती हार का मैं
क्यों रहूँ यों ही क्षरण में
नमन करता तव चरण में।

ध्येय चिंतन, शुद्ध है तन
साधना है देन तेरी,
सुमन यह चरणों में तेरे
भेंट कर स्वीकार मेरी।
मैं हूँ सुत अनुचर भी तेरा
अर्चना करता चरण में
नमन करता तव चरण में।

♦♦

शक्ति पाएँ

है अँधेरा यदि कहीं तो
सूर्य से तुम तेज लो,
हीन हैं जो दृष्टि-बल से
तुम उन्हें भी दृष्टि दो।

ज्ञान लो माँ शारदा से
शिव शिवा से शक्ति लो,
माँ का सद् आशीष लो
मीरा की अनुपम भक्ति लो।

चंद्र से लें बिंदु अमृत
लें गुणों को राम के,
शांति-सुख दें, हम जगत् को
गुण सभी लें काम के।

कृष्ण की सद्नीति को भी
ध्यान में हर क्षण रखें,
लेकर प्रतिज्ञा प्रताप की,
एक क्षण भी ना थकें।

विवेकानंद जैसे ही
चरित्रवान हम बन जाएँ,
महावीर की दया को समझें
त्याग दधीचि का पाएँ।

♦♦

कौनसी रीति?

मुझको तुम इतना बतला दो
सागर में इतना जल क्यों?
लहराती उफनाती रहतीं
नदियाँ करतीं कल-कल क्यों?

यह भी तुम मुझको बतलाओ
क्यों न नीर नदियाँ पीतीं?
दूजों को ही जल देना है
इसी नीति पर वे जीतीं।

वृक्ष फूल और फल देते हैं
किंतु स्वयं क्या खाते हैं?
सदा दूसरों को फल देकर
वृक्ष स्वयं क्या पाते हैं?

♦♦

आज निकट है लक्ष्य

जीवन–मृत्यु के प्रश्न सामने
वह कैसा समय रहा होगा।
ओठों पर मधु मुस्कान बसी
नयनों से अश्रु बहा होगा।

युद्ध हुआ होगा जीवन से
मृत्यु ने आ घेरा होगा।
सबको क़ैद किए विपदा ने
डाल दिया डेरा होगा।

मत पूछो अपने जीवन में
मैंने क्या न सहा होगा,
ओठों पर मधु मुस्कान बसी
नयनों से अश्रु बहा होगा।

विजय–पताका हाथ लिए
किस क्षण तक मैंने युद्ध किया,
जबकि सोचा था जन–जन ने
घनघोर मृत्यु का गरल पिया।

संदेश हमारे प्रियजन को
जब तुमने नहीं कहा होगा,
ओठों पर मधु मुस्कान बसी
नयनों से अश्रु बहा होगा।

तुम्हें पता है जूझा हूँ, पर
जीवन–मार्ग नहीं छोड़ा,
अपने लक्ष्य–शिखर से मैंने
अपना मुख कब–कब मोड़ा।
आज निकट है लक्ष्य–शिखर
पर तब तो दूर रहा होगा,
ओठों पर मधु मुस्कान बसी
नयनों से अश्रु बहा होगा।

♦♦

तुमने मेरी झोंपड़ी जलाई

तुमने मेरी झोंपड़ी जलाई है
अपनी मंज़िलों को चढ़ाने के लिए,
तुम्हारी शान बढ़ाने के लिए
मैंने कहा कोई बात नहीं
मेरी झोंपड़ी जलने दो,
इस झोंपड़ी का पत्थर-पत्थर भी ढलने दो।

इतना ही नहीं, तो
मेरी झोंपड़ी वाले
बिलबिलाते रहे,
एक ग्रास रोटी के लिए
सदियों तक चिल्लाते रहे,
मैंने कहा कोई बात नहीं
इस बात को भी चलने दो,
देश के वैभव और हित की ख़ातिर
हम ग़रीबों को मरने दो।

लेकिन
मैं देख रहा हूँ कि
मेरी झोंपड़ी की जगह

गगन छूने वाला भवन खड़ा है
और इसके अंदर वह जन पड़ा है,
जिसने नफ़रत की दीवारों को
हमारे सीने पर खड़ा किया है
जगमगाते जीवन को मिटाने के लिए
हमें बारूद का ज़हर दिया है
भाई को भाई से दूर किया है
मार-काट के नग्न नृत्य से
ख़ाली शहर किया है।

हे मनुज!
जिन्होंने हमारे दिलों की दूरी को बढ़ाया है,
निर्दोष लोगों को शूली पर चढ़ाया है,
आज अपनी आन बचाने के लिए
इन्हें मिलकर कुचलना पड़ेगा।
आज तक ये हमें जलाते रहे,
अब हमें इन्हें जलाना पड़ेगा।

♦♦